पंचदीप भारती

अंक–19 वर्ष 2025–26

issa

(अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संघ)

सर्वोच्च स्तर पर सामाजिक सुरक्षा

सामाजिक सुरक्षा दायरा 19 से 64.5% बढ़ा

94 करोड़ नागरिक सामाजिक सुरक्षा से सम्बद्ध

ई–श्रम पोर्टल पर 30.91 करोड़ असंगठित कामगार पंजीकृत हुए

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि. ESIC सामाजिक सुरक्षा SOCIAL SECURITY

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002

अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संघ (आइ.एस.एस.ए.) के मंच पर माननीय श्रम एवं रोजगार मंत्री, भारत सरकार डॉ. मनसुख मांडविया

अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संघ से एशिया और पैसिफिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सामाजिक सुरक्षा सेवा प्रदान करने के लिए पुरस्कार ग्रहण करते हुए कर्मचारी राज्य बीमा निगम के महानिदेशक श्री अशोक कुमार सिंह (आइएएस)

पंचदीप भारती

अंक-19 वर्ष 2025-26

विभागीय हिंदी गृह पत्रिका

संपादक मंडल

प्रधान संरक्षक
श्री अशोक कुमार सिंह (भा.प्र.से.)
महानिदेशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

संरक्षक
श्री रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संपादक
श्री श्याम सुन्दर कथूरिया
निदेशक (राजभाषा)

सह- संपादक
श्री श्याम कुमार
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

कार्यकारी संपादक
डॉ. जय प्रकाश
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री देवेन्द्र कुमार
निजी सचिव

विशेष सहयोग
श्री त्रिरत्न
उप निदेशक (राजभाषा)

श्रीमती रोजलीन हेमरोम
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री रविन्द्र कुमार
व. अनुवाद अधिकारी

श्री राजेश कुमार
व. अनुवाद अधिकारी

श्री सुरेश कुमार
क. अनुवाद अधिकारी

श्री जैनेन्द्र वरुण
क. अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन,
सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110 002

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, लेखों आदि में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। इनमे संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ पर अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संघ का लोगो दर्शाया गया है। हाल ही में भारत ने सामाजिक सुरक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एशिया और पैसिफिक क्षेत्र में श्रेष्ठता प्रमाण पत्र प्राप्त किया है। इस वैश्विक उपलब्धि के प्रति पत्रिका का यह अंक समर्पित किया गया है।

संपादकीय

सुधी पाठको,

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय की हिंदी गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** का यह उन्नीसवाँ अंक आपके हाथों में है। यह अंक न केवल हमारी सृजनशीलता का दर्पण है, अपितु निगम परिवार की सामूहिक प्रतिभा, साझा अनुभवों और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत दस्तावेज भी है।

इस बार भी पत्रिका का स्वरूप बहुआयामी है। इस अंक में माननीय श्रम और रोजगार मंत्री जी एवं हमारे महानिदेशक महोदय सहित अन्य गणमान्य अधिकारियों के प्रेरणादायी संदेश संकलित हैं, जो हमें न केवल कार्य के प्रति उत्तरदायित्व की याद दिलाते हैं, बल्कि नए संकल्प और ऊर्जा का संचार भी करते हैं। सम्पूर्ण पत्रिका इनकी शुभकामनाओं से और भी समृद्ध हो गई है। इनके मार्गदर्शन से प्रेरित होकर, निगम कार्मिक लेखन कार्यों में भी पूरी रुचि के साथ सक्रिय रहते हैं।

लेखनी का सहज प्रवाह और आत्मीय भावनाओं के साथ प्रस्तुत नई कविताएँ, कहानियाँ और निबंध हमारे सहकर्मियों की रचनात्मकता को उजागर करते हैं। कार्यालय की विविध गतिविधियों का संकलन हमें हमारे सामूहिक प्रयासों और उपलब्धियों का स्मरण कराता है, वहीं यात्रा संस्मरण नई जगहों और अनुभवों की झलक दिखाकर पाठकों की दृष्टि का विस्तार करता है। यही विविधता इसे और अधिक रोचक एवं पठनीय बनाती है तथा हमारे सहकर्मियों की संवेदनशीलता को प्रकट करती है।

हिंदी भाषा, राष्ट्र की आत्मा और पहचान की प्रतीक है। इस पत्रिका के माध्यम से हम सब एक बार फिर अनुभव करते हैं कि यह केवल सरकारी काम–काज की भाषा नहीं है। 'हिंदी' राजभाषा दायित्व का निर्वाह भर ही नहीं है, बल्कि यह हमारे विचार और चिंतन की सहज अभिव्यक्ति भी है। पंचदीप भारती इसी भावना का सशक्त माध्यम है, जो हमें आत्मीयता से जोड़ती है और सभी को एक साझा मंच प्रदान करती है।

हम आशा करते हैं कि यह अंक आपको आनंदित करेगा और आने वाले अंकों के लिए भी आपके रचनात्मक योगदान को प्रोत्साहित करेगा। इस पत्रिका को सार्थक बनाने वाले सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। पाठकों की प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए सदैव मूल्यवान रही हैं और इस अंक के लिए भी हम आपके सुझावों की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे।

आप सभी को, इस साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्रा का सहभागी बनने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सप्रेम,

श्याम सुंदर कथूरिया

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	माननीय श्रम मंत्री जी का संदेश	डॉ. मनसुख मांडविया	6
2	माननीय श्रम राज्य मंत्री जी का संदेश	शोभा करांदलाजे	7
3	श्रम सचिव महोदया का संदेश	वंदना गुरनानी	8
4	प्रधान संरक्षक के उद्गार	अशोक कुमार सिंह	9
5	संरक्षक के मनोगत	रत्नेश कुमार गौतम	10
6	अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संगठन...........	सुरेश कुमार	11
7	सामाजिक सुरक्षा की वर्तमान स्थिति	राजभाषा शाखा	12–14
8	हिंदी ही क्यों?	बृजेश मिश्रा	15–21
9	राजभाषा निरीक्षण की कार्यशैली एक परिचय	त्रिरत्न	22–24
10	आंवला के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ	डॉ. एस. वरलक्ष्मी	25–27
11	हर पत्थर अनमोल है	ऋतु वासन	28
12	आशा मत छोड़ना	नवीन कुमार यादव	29
13	नैनों को रहने दो	सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल	30–31
14	शेष दिवस	श्वेता सिन्हा	31
15	मेरा मन	जितेंद्र सिंह	32
16	अस्थि पंजर की चंचलता	त्रिरत्न	33
17	एक अफसोस ऐसा भी	अमरदीप सिंह मोगा	35–36
18	तीन कविताएँ	अमरदीप सिंह मोगा	36
19	भारत : एक संक्षिप्त यात्रा	अर्पित तोमर	37–38
20	दिल का स्थान – राजस्थान	जसराम मीना	39–40
21	मौन शब्द	शैफाली दुबे	40
22	कुंभ स्नान	प्रवीण कुमार	41–42
23	तूम सूरज मैं चंदा	प्रीति पराशर	43–44
24	भोले–भुलक्कड़	मनोज कुमार	45
25	मिलने की अधूरी कहानी	रामराज मीना	46
26	पूतना का सच	रण सिंह	47–48
27	जीवन क्या है?	राजीव शर्मा	49–50
28	भाषिणी – कृत्रिम बुद्धिमत्ता से अनुवाद	श्याम सुंदर कथूरिया	51–53
29	क.रा.बी.निगम दिवस – 2025		54
30	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस – 2025		55
31	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – 2025		56
32	सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2024		57
33	राजभाषा पखवाड़ा – 2024		58

डॉ. मनसुख मांडविया
DR. MANSUKH MANDAVIYA

सत्यमेव जयते

मंत्री
श्रम एवं रोजगार
व युवा कार्यक्रम एवं खेल
भारत सरकार
Minister
Labour & Employment
and Youth Affairs & Sports
Government of India

संदेश

****

यह हर्ष की बात है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर पूरे देश में राजभाषा के प्रति आदर्श वातावरण का निर्माण हुआ है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हुए राजभाषा हिंदी के माध्यम से निगम की सेवाओं का विस्तार किया है।

आशा है, हिंदी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा के प्रति लगाव एवं राष्ट्रीयता की भावना का उत्तरोत्तर विकास होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशनार्थ शुभकामनाएं।

(डॉ. मनसुख मांडविया)

120, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली – 110001 **दूरभाष** : +91–11–23717515, 23710240 **फैक्स** :+91–11–23711708
120, Shram Shakti Bhawan, New Delhi – 110001 **Phone** : +91-11-23717515, 23710240 **Fax** : +91-11-23711708
ई–मेल /E-mail : minoffice-mole@nic.in; office-moyas@gov.in

शोभा करांदलाजे
SHOBHA KARANDLAJE

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
श्रम एवं रोजगार और
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister of State For
Labour & Employment and
Micro, Small & Medium Enterprises
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

'हिंदी' भाषा से भी बढ़कर देश के प्रति भाव और भक्ति है। राष्ट्र की वाणी के रूप में हिंदी देश-विदेश में अपनी पहचान रखती है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उद्देश्यों को पूरा करने में हिंदी सबसे अधिक सहायक है और सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग कार्य की सुगमता, तत्परता और स्पष्टता सभी को साधता है। आशा है, पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों की कार्य कुशलता और रचनात्मकता में वृद्धि करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं!

(शोभा करांदलाजे)

कार्यालय : 104, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली–110001 टेली. : 011–23720013 ई–मेल: mos.shobha@gov.in
Office : 104, Shram Shakti Bhawan, New Delhi–110001 Tel. : 011-23720013 E-mail : mos.shobha@gov.in
कमरा सं. 133, उद्योग भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001 टेली. : 011–23061258, 23063142, फैक्स : 011–23010324, ई–मेल: mos-msme@gov.in
Room No. 133, Udyog Bhawan, Rafi Marg, New Delhi–110011 Tel. : 011-23061258, 23063142, Fax : 011-23010324, E-mail : mos-msme@gov.in

सत्यमेव जयते

वंदना गुरनानी
भारत सरकार के सचिव
VANDANA GURNANI
Secretary to Govt. of India

MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT
SHRAM SHAKTI BHAVAN
NEW DELHI - 110001

श्रम और रोजगार मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन
नई दिल्ली-110001
Tele : 91-11-23710265
E-mail : secy-labour@nic.in

संदेश

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय की हिंदी पत्रिका **'पंचदीप भारती'** के 19वें अंक के प्रकाशनार्थ शुभकामनाएं!

हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति कर्तव्यों के निर्वहन एवं कार्य के समुचित निष्पादन में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करता है। कार्यालयी कामकाज के लिए राजभाषा के रूप में हिंदी सरलता और संभावनाओं से परिपूर्ण है। इससे काम का त्वरित निपटान सहज हो जाता है।

आशा है इस अंक द्वारा कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के विविध पक्षों की जानकारी मिलेगी और राजभाषा में कार्य करने की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी होगी।

वंदना गुरनानी

(वंदना गुरनानी)

अशोक कुमार सिंह, भा.प्र.से.
महानिदेशक
ASHOK KUMAR SINGH, I.A.S.
DIRECTOR GENERAL

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

प्रधान संरक्षक के उद्‌गार

निगम मुख्यालय की गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का 19वाँ अंक, पत्रिका प्रकाशन की लगभग दो दशकों की सफल यात्रा को दर्शाता है। सामाजिक सुरक्षा को समर्पित इस संगठन में राजभाषा हिंदी की आवश्यकता इसके उद्देश्यों के लिए अनिवार्य है। निगम के सभी पणधारकों के साथ सीधा संवाद करने का माध्यम एक लोक स्वीकृत भाषा ही हो सकती है, जो हिंदी का सहज गुण है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी पत्रिका **'पंचदीप भारती'** का यह अंक अपनी सामग्री के माध्यम से सभी के लिए सूचनाप्रद, तथ्यपरक और मनोरंजक होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

(अशोक कुमार सिंह)

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

मुख्यालय / HEADQUARTERS
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सीआइजी मार्ग, नई दिल्ली
PANCHDEEP BHAWAN, CIG MARG, NEW DELHI

संरक्षक के मनोगत

कार्यालयों में गृह पत्रिका का प्रकाशन, राजभाषा गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। गृह पत्रिकाओं की गुणवत्ता और लेखों की गंभीरता अब अनेक गृह पत्रिकाओं में दिखाई देती है। यह सही है कि कार्यालय के कार्मिकों में भी साहित्यिक गुण भरपूर रहता है, परंतु साहित्यिक रचनाओं के साथ–साथ आज पत्रिकाओं में कम्प्यूटर, आइटी, कार्यालय की गतिविधियों, राजभाषा कार्यान्वयन के उपबन्धों, ई–टूल्स, तकनीक और हिंदी आदि से संबंधित लेख भरपूर मात्रा में मिलते हैं। अब पत्रिकाएँ केवल खाना–पूर्ति के लिए प्रकाशित नहीं की जा रही हैं, बल्कि ऐसी–ऐसी अच्छी पत्रिकाएँ आ रही हैं, जिन्हें भविष्य के लिए संग्रह कर रखा जा सकता है और आगे के लिए ज्ञानवर्धन और कार्यों के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है।

इसी कड़ी में एक और कदम आगे बढ़ाते हुए **'पंचदीप भारती'** के 19वें अंक को प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे खुशी है कि इसमें विभिन्न विषयों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि यह पत्रिका सभी के लिए लाभदायक सिद्ध होगी।

राजभाषा में अधिकाधिक कार्य हों, हिंदी की यात्रा सतत् रूप से वैश्विक स्तर पर बढ़ती रहे, ऐसी मेरी कामना है।

आपके अमूल्य सुझावों और पत्रिका के संबंध में आपके विचारों की सदैव की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

(रत्नेश कुमार गौतम)

अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संगठन के एशिया और पैसिफिक फोरम पर क.रा.बी.निगम सम्मानित

सुरेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, नई दिल्ली

रियाद, सऊदी अरब में अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संघ (आइ.एस.एस.ए.) के एशिया और पैसिफिक के क्षेत्रीय सामाजिक सुरक्षा फोरम में कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने विभिन्न श्रेणियों में 4 श्रेष्ठता प्रमाण–पत्र प्राप्त किए।

एशिया और पैसिफिक क्षेत्र में एक नेतृत्व पूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए, अंतरराष्ट्रीय मंच पर कर्मचारी राज्य बीमा निगम की उपलब्धियों को सराहा गया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम को एशिया और पैसिफिक क्षेत्र के क्षेत्रीय सामाजिक सुरक्षा फोरम के निर्णायक मंडल की विशेष टिप्पणी के साथ इसके मोबाइल एप्लिकेशन AAA+ के लिए एक गुणता प्रमाण पत्र के अलावा व्यावसायिक दुर्घटना एवं बीमारी, सर्वसमावेशी निवेश और सिस्टम रेसिलेंस जैसे तीन श्रेष्ठता प्रमाण–पत्रों से दिनांक 3 दिसंबर, 2024 को सऊदी अरब के रियाद में सम्मानित किया गया। निगम की ओर से श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक, क.रा.बी.निगम ने पुरस्कार ग्रहण किया।

वैश्विक सामाजिक सुरक्षा समुदाय के प्रमुख पणधारकों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कार प्रदान किए गए। वैश्विक सामाजिक सुरक्षा समुदाय के प्रमुख हितधारकों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में ये पुरस्कार कर्मचारी राज्य बीमा निगम को विभिन्न प्रकार के सामाजिक सुरक्षा हितलाभों के लिए प्रदान की गई सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए प्रदान किए गए।

ये सम्मान भारत की कामकाजी आबादी को स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा सेवाएँ प्रदान करने में नवाचार, दक्षता और सामाजिक समावेशन के प्रति कर्मचारी राज्य बीमा निगम की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

यह सम्मान कर्मचारी राज्य बीमा निगम की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को और मजबूत करता है एवं सर्वोत्तम प्रक्रिया को साझा करने तथा वैश्विक स्तर पर सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के प्रति उसके समर्पण को दर्शाता है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआइसी) का 'आस्क एन अपॉइंटमेंट' AAA+ मोबाइल ऐप, जो एंड्रॉइड और आइओएस दोनों पर उपलब्ध है, बीमाकृत व्यक्तियों, हितलाभार्थियों, कर्मचारियों और कर्मचारी राज्य बीमा पेंशनभोगियों को सेवा प्रदान करता है और यह अंग्रेजी, हिंदी तथा छह क्षेत्रीय भाषाओं सहित 8 भाषाओं में उपलब्ध है। स्वास्थ्य सेवाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए डिजाइन किया गया, यह ऐप उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक करने, कतार में प्रतीक्षा किए बिना चेक–इन करने और अपने ई–स्वास्थ्य रिकॉर्ड तक अभिगम(पहुँच) की सुविधा देता है। पिछले दो वर्षों में, हितलाभार्थियों के लिए आधार सीडिंग, घर पर नमूना संग्रह अनुरोध और विभिन्न कर्मचारी राज्य बीमा हितलाभों के लिए पात्रता जाँच जैसी नई सुविधाएँ जोड़ी गई हैं। इसके अतिरिक्त, फार्मेसी काउंटरों पर दवाओं के नुस्खों को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे AAA+ अपॉइंटमेंट के लिए कुशल सेवा सुनिश्चित होती है।

सामाजिक सुरक्षा की वर्तमान स्थिति

राजभाषा शाखा
मुख्यालय
क.रा.बी.निगम, नई दिल्ली

सामाजिक सुरक्षा से तात्पर्य:

सामाजिक सुरक्षा से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है, जिसके तहत समाज, व्यक्तियों और परिवारों को आय की सुरक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच सुनिश्चित करके जीवन के विभिन्न जोखिमों, जैसे बीमारी, अशक्तता, बेरोजगारी, वृद्धावस्था और मृत्यु पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह एक सुरक्षा जाल के रूप में काम करती है, जो कमजोर या जरूरतमंद लोगों को न्यूनतम आय और अन्य आवश्यक सहायता प्रदान कर आर्थिक कठिनाई को कम करती है। यह सहायता नकद हितलाभ जैसे पेंशन और बेरोजगारी भत्ता या वस्तुगत हितलाभ जैसी देखभाल सेवाओं के रूप में हो सकती है। इसका उद्देश्य गरीबी और भेद्यता को कम करना, आय सुरक्षा सुनिश्चित करना और लोगों को आर्थिक कठिनाइयों से बचाना है, जिससे समाज में एक स्थिर और समान वातावरण बनता है।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन:

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन सामाजिक सुरक्षा में अग्रणी है। यह एकमात्र अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो बुनियादी सामाजिक सुरक्षा सिद्धांतों पर आधारित है और दुनियाभर में सभी के लिए न्यूनतम मानकों को स्थापित करता है, इसके अनुसार सामाजिक सुरक्षा की **नौ शाखाएँ** हैं– चिकित्सा देखभाल, अस्वस्थता हितलाभ, बेरोजगारी हितलाभ, वृद्धावस्था हितलाभ, रोजगार जनित चोट हितलाभ, पारिवारिक हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, निःशक्तता हितलाभ और आश्रितजन हितलाभ।

सामाजिक सुरक्षा के मुख्य उद्देश्य:–

- **स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच प्रदान करना:**

  सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सुनिश्चित करते हैं कि लोगों को निवारण और उपचार दोनों के लिए चिकित्सा देखभाल तक पहुंच प्राप्त हो।

- **आय सुरक्षा की गारंटी:**

  प्राथमिक लक्ष्य मूल आय सुनिश्चित करना है, विशेषकर तब जब व्यक्ति विभिन्न घटनाओं के कारण काम नहीं कर सकता या आय अर्जित नहीं कर सकता।

- **विभिन्न जीवन जोखिमों को व्याप्ति में लेना:**

  विशिष्ट आकस्मिकताओं के समय आय की सुरक्षा प्रदान की जाती है जिनमें वृद्धावस्था, बेरोजगारी, बीमारी, मातृत्व, अशक्तता, रोजगार संबंधी चोटें, कमाने वाले की मृत्यु शामिल हैं।

- **स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देना:**

  सामाजिक सुरक्षा चिकित्सा देखभाल और अन्य हितलाभों द्वारा व्यक्तियों और परिवारों के कल्याण में योगदान देती है।

- **परिवार सहायता:**

  बच्चों की शिक्षा और अन्य परिस्थितियों से संबंधित लागतों को वहन करने में परिवारों की मदद करती हैं।

- **उपयोगी कार्यबल को प्रोत्साहित करना:**

  सामाजिक सुरक्षा स्थिरता और सहायता प्रदान करके स्थिर श्रम संबंधों को बनाए रखने में मदद करती है जो उपयोगी कार्यबल में योगदान देती है।

- **सामाजिक एकजुटता और विकास में योगदान:**

  सामाजिक सुरक्षा संकटों और संरचनात्मक परिवर्तनों के दौरान सुरक्षा जाल के रूप में कार्य करती है, जीवन स्तर को बढ़ाती है और देश की प्रगति एवं विकास में योगदान देती है।

- **पूर्ण रोजगार को बढ़ावा देना:**

  सुरक्षा प्रावधानों को रोजगार नीतियों के साथ जोड़कर अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ)

का उद्देश्य सभी के लिए लाभकारी रोजगार को प्रोत्साहित करना और बढ़ावा देना है।

सामाजिक सुरक्षा कैसे काम करती है:

- **सामाजिक बीमा:**

  यह वेतन से प्राप्त अंशदानों द्वारा वित्तपोषित होती है, जैसे कि स्वास्थ्य बीमा या पेंशन योजनाएँ।

- **सामाजिक सहायता:**

  यह सामान्य कराधान या सार्वजनिक संसाधनों से वित्तपोषित होती है और कमजोर व्यक्तियों या परिवारों को नकद या वस्तु रूप में सहायता प्रदान करती है।

- **सरकारी योजनाएँ:**

  कई सामाजिक सुरक्षा हितलाभ राज्य–प्रशासित प्रणालियों द्वारा प्रदान किए जाते हैं, जो सामाजिक कल्याण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

- **पेंशन:**

  बुढ़ापे में आय प्रदान करना।

- **बेरोजगारी हितलाभ:**

  काम न होने पर वित्तीय सहायता देना।

- **स्वास्थ्य बीमा:**

  चिकित्सा देखभाल के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना।

- **मातृत्व हितलाभ:**

  माँ और बच्चे की देखभाल के लिए सहायता देना।

सामाजिक सुरक्षा सेवा प्रदान करने में भारत की भूमिका:

भारत सरकार सामाजिक सुरक्षा सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें वित्तीय सहायता, स्वास्थ्य सेवाएँ और खाद्य सुरक्षा जैसे विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रम शामिल हैं, ताकि देश भर में गरीबों और कमजोर आबादी की गरीबी को कम किया जा सके और उनकी आजीविका में सुधार किया जा सके। आधार और जन–धन योजना जैसी डिजिटल पहलों के माध्यम से वित्तीय समावेशन को भी बढ़ावा दिया जाता है, जिससे लोगों को सीधे सरकारी लाभ और बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच मिलती है। इसके अलावा, **सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020** के तहत गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कानूनी मान्यता और हितलाभ प्रदान किए जाते हैं, और ई–श्रम पोर्टल ने असंगठित श्रमिकों को पंजीकृत कर इस दायरे को और बढ़ाया है।

मुख्य पहलू

- **वित्तीय समावेशन:**

  जन–धन योजना ने बड़ी संख्या में लोगों को औपचारिक बैंकिंग सेवाओं से जोड़ा है, जिससे उन्हें सरकारी हितलाभों तक सीधी पहुँच मिली है।

- **आधार का उपयोग:**

  आधार सीडिंग कार्यक्रम ने डिजिटल पहचान सुनिश्चित की है, जिससे लाभार्थियों की पहचान और लक्ष्यीकरण में सुधार हुआ है।

- **व्याप्ति में विस्तार:**

  भारत में सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति 2015 में 19% से बढ़कर 2025 में 64.3% हो गई है, जिससे लाखों लोगों को लाभ मिल रहा है।

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए पहल:

सरकार असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिये असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (यूडब्ल्यूएसएस), 2008 को लागू कर रही है, जिसके तहत निम्नलिखित मामलों पर उपयुक्त कल्याणकारी योजनाएं बनाई जा रही हैं: (i) जीवन और अशक्तता व्याप्ति (ii) स्वास्थ्य और मातृत्व हितलाभ, (iii) वृद्धावस्था सुरक्षा और (iv) केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित कोई अन्य हितलाभ।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के तहत ग्राहक द्वारा किये गये अंशदान के आधार पर जीवन और अशक्तता व्याप्ति उपलब्ध है । पीएमजेजेबीवाई 18 से 50 वर्ष की आयु के लोगों के लिये उपलब्ध है और यह 436 रुपये के वार्षिक प्रीमियम पर किसी भी कारण से मृत्यु के मामले में 2.00 लाख रुपये की जोखिम व्याप्ति प्रदान करता है । प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) 18 से 70 वर्ष की आयु के लोगों के लिये उपलब्ध है, जिसमें 20 रुपये की वार्षिक प्रीमियम के भुगतान पर आकस्मिक मृत्यु या पूर्ण स्थायी अशक्तता के मामले में 2.00 लाख रुपये और आंशिक स्थायी अशक्तता के लिये 1.00 लाख रुपये की जोखिम व्याप्ति है ।

आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबीपीएमजेएवाई) द्वितीयक और तृतीयक सेवा अस्पताल

में भर्ती होने के लिये प्रत्येक पात्र परिवार को पांच लाख रुपये की वार्षिक स्वास्थ्य व्याप्ति प्रदान करती है।

वृद्धावस्था सामाजिक सुरक्षा व्याप्ति प्रदान करने के लिये, भारत सरकार ने 2019 में प्रधानमंत्री श्रम योगी मान–धन (पीएम–एसवाईएम) पेंशन योजना शुरू की । यह 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद 3000 रुपये की मासिक पेंशन प्रदान करती है । 18–40 वर्ष की आयु के असंगठित क्षेत्र के वे श्रमिक जिनकी मासिक आय 15000 रुपये या उससे कम है तथा जो ईपीएफओ/ईएसआईसी/ एनपीएस (सरकार द्वारा वित्तपोषित) के सदस्य नहीं हैं, वे पीएम– एसवाईएम योजना में शामिल हो सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत मासिक अंशदान का 50 प्रतिशत लाभार्थी द्वारा देय है तथा केंद्र सरकार द्वारा समान अंशदान का भुगतान किया जाता है।

इसके अतिरिक्त असंगठित क्षेत्र के कार्मिकों के लिए निम्नलिखित व्यवस्थाएँ दी गई हैं–

1–**ई–श्रम पोर्टल:** यह असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को पंजीकृत करता है, जिससे उन्हें सामाजिक सुरक्षा हितलाभ मिल पाते हैं।

2– **सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020:** यह गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कानूनी मान्यता प्रदान करती है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा हितलाभ उपलब्ध कराती है।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए योजनाएँ:

- **प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई– ग्रामीण):**

  इसने ग्रामीण क्षेत्रों में घर उपलब्ध कराए हैं, जिनमें महिलाओं और कमजोर समुदायों के नाम पर बड़ी संख्या में घर आवंटित किए गए हैं।

- **बच्चों और महिलाओं के लिए कल्याणकारी उपाय:**

  मिशन वात्सल्य जैसे कार्यक्रम बच्चों के विकास, संरक्षण और भागीदारी के अधिकारों को सुनिश्चित करते हैं, जबकि माताओं के लिए भी कई हितलाभ सुनिश्चित किए जाते हैं।

- **दीर्घकालिक सुरक्षा:**

  राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) नागरिकों को सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:**

  विश्व बैंक समूह भारत को सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों की प्रभावशीलता में सुधार करने में सहायता करता है।

देश भर में कार्यरत सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण संगठनों के कार्य से भारत की सामाजिक सुरक्षा सेवा में अभूतपूर्व सुधार हुआ है।

जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा, तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।
-राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह

हिंदी ही क्यों?

बृजेश मिश्रा
सहायक निदेशक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, हरियाणा

भारत एक बहुभाषी देश है और साथ में लोकतांत्रिक भी। हमारी लोकतांत्रिकता की मिसाल तो अब अमेरिका और फ्रांस जैसे देशों को भी लेनी चाहिए, जहाँ चुनावी नतीजे आने के बाद बड़े पैमाने पर हिंसा देखी जाती है और वहीं हमारे देश में हाल में हुए लोकसभा चुनाव के बाद कितने शांतिपूर्वक तरीके से सत्ता का हस्तांतरण हुआ, यह सबके सामने दृश्यमान है। ऐसे में इतनी मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था हम बना कैसे पाए? जबकि हमारे देश में बहुत तरह की विविधताएँ (भाषा, क्षेत्र, धर्म आदि) देखने को मिलती हैं। यहाँ पहाड़ी, मैदानी, समुद्र के निकट रहने वाले लोग हैं। दर्जनों भाषाएं और सैंकड़ों बोलियाँ हैं। फिर भी हम एक सफल लोकतंत्र हैं।

एक बहुभाषी देश के लिए, जब वह लोकतंत्र हो, तो किसी एक भाषा को सबसे महत्वपूर्ण का दर्जा देना जटिल हो जाता है। खासकर हमारे देश में, जहाँ प्राचीन, समृद्ध और संपूर्ण भाषाएं बहुत सारी हैं। अब आप देख लीजिए कि तमिल भाषा को भारत की पहली शास्त्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ और उसके बाद दक्षिण भारत की तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया और भारत में भाषा की जननी संस्कृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। ऐसे में संविधान सभा के सामने जब यह प्रश्न उठा कि भारत की राष्ट्रभाषा क्या हो, तो स्वाभाविक सी बात थी कि एक भाषा की तुलना में अन्य भाषाओं को कैसे कमतर आँका जाए। भले ही राष्ट्रभाषा के बहुत से आंदोलन भारत में हुए हैं, लेकिन आज तक किसी भाषा को राष्ट्रभाषा होने का दर्जा तो प्राप्त नहीं हुआ। हाँ, राजभाषा के रूप में संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिंदी को राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। ऐसे में हिंदी ही क्यों? यह प्रश्न संविधान सभा के सामने भी था। आज भी हमारे सामने है, तो इसलिए समझते हैं कि उस समय संविधान सभा ने जो निश्चय किया, क्या हम उससे अपने विचारों को सन्निकट पाते हैं?

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि **राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है** और हम यह जानते भी हैं कि विश्व के जितने भी राष्ट्र हैं, वे अपनी एक–न–एक राष्ट्रीय भाषा से तो जाने जाते हैं। यहां तक कि उनके नाम से ही उनके राष्ट्र की भाषा का नाम है, उदाहरण के लिए रूस–रूसी, फ्रांस– फ्रेंच, नेपाल–नेपाली, जापान–जापानी, इंग्लैंड– इंग्लिश। यदि इसी सूत्र को देखें तो हिंदुस्तान की भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी लगेगी, पर हमारे देश में यह सूत्र सटीक नहीं होता।

प्रश्न तो अभी भी बरकरार है कि हिंदी ही क्यों?

संविधान सभा ने भाषा के प्रश्न पर 12 से लेकर 14 सितंबर,1949 तक विस्तार से चर्चा की। प्रस्तुत हैं कुछ अंश –

12 सितंबर,1949 को, जिसे वर्तमान में हम संविधान का भाग 17 (अनुच्छेद 343 से लेकर के 351) के नाम से जानते हैं, उसका प्रारूप 'प्रारूप–समिति' के माननीय सदस्य **श्री एन. गोपालस्वामी अय्यंगर** ने प्रस्तुत किया। अय्यंगर जी तमिलनाडु से थे और अपने अभिभाषण की शुरुआत में उन्होंने यह कहा कि अंततः भारत की भाषा हिंदी ही होनी है। इस अंग्रेजी भाषा में हम लोग पढ़े–बढ़े, उसे हमें अंततः छोड़ना ही है।

वर्तमान में हिंदी इतनी विकसित नहीं है। इसमें बहुत से नए शब्द–अभिव्यक्तियां जोड़ने हैं और विधायिका से संबंधित बहुत बड़ा अनुवाद कार्य इसमें किया जाना है। इसीलिए शुरुआत में 15 वर्षों तक अंग्रेजी को चलाए रखने की व्यवस्था करते हुए संघ की राजभाषा का मसौदा प्रस्तुत करता हूँ।

पहली प्रतिक्रिया में माननीय **सेठ गोविंद दास** ने देवनागरी लिपि में हिंदी का समर्थन किया और अंकों के लिए देवनागरी अंकों की वकालत की।

दूसरी प्रतिक्रिया आई, माननीय **श्री नज़ीरुद्दीन अहमद** की, जो पश्चिम बंगाल से थे और जिन्होंने संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई। उनका मानना था, हिंदी अभी मौलिक स्तर पर है और उतनी विकसित नहीं कि उसे राष्ट्रभाषा इतनी जल्दबाजी में घोषित किया जाए। हिंदी को यदि राष्ट्रभाषा होना है तो स्वतंत्र एवं ऐच्छिक स्वरूप में हो, जोर–जबरदस्ती से न हो। जब तक अखिल भारतीय भाषा के रूप में कोई भाषा विकसित न हो, जो वैज्ञानिक, तकनीकी, गणित, साहित्य, इतिहास, राजनैतिक, दर्शन, आदि विषयों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सशक्त न हो, तब तक अंग्रेजी ही भारत की राजभाषा होनी चाहिए। मैंने कुछ लोगों को कहते सुना है कि हिंदी यदि अभी राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त न कर सकी तो कभी न कर पाएगी। ऐसा है तो यह सभा क्या देश के लोगों से सलाह किए बिना ही इतना बड़ा फैसला ले लेगी। ऐसे मामलों पर इस सभा को सावधानी बरतनी चाहिए, न कि अति उदार होकर एकपक्षीय फैसला करना चाहिए। जब भारत आजाद है तो उसे विश्व के अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा में भी रहना होगा और अंतरराष्ट्रीय ज्ञान सुलभता से अंग्रेजी में उपलब्ध है। हम अंग्रेजी की व्यापकता को नकार नहीं सकते। केवल इसलिए अंग्रेजी को नकारना कि इस भाषा का प्रयोग हम पर राज करने वाले करते थे तो इसे हटाना ही चाहिए, सही न होगा। हमारे अंदर हीन भावना नहीं होनी चाहिए। जापान ने बहुत पहले अंग्रेजी को स्वेच्छा से राजभाषा चुना और उससे बहुत लाभान्वित हुआ। यदि जापान पिछले विश्व युद्ध में न पड़ता तो आज दुनिया का बहुत महान देश होता। फिर हिंदीतर भाषियों को हिंदी सिखाने के लिए सबसे पहले उनकी मातृभाषा में लिखना–पढ़ना सीखना होगा। कोई व्यक्ति मातृभाषा व्यवहार से सीखता है, दूसरी भाषा तभी सीख सकता है, जब अपनी भाषा से उसके अनुवाद को सीखे। आज भारत में केवल 15% लोग पढ़–लिख सकते हैं, बाकी 85% को क्या एकदम या 15 वर्ष में अपनी भाषा और फिर हिंदी सिखाई जा सकती है?

इन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा करते हुए नज़ीर साहब ने भाषा के आधार पर राज्य निर्माण का फार्मूला भी सुझाया, उन्होंने उस समय की सबसे विकसित भाषा के रूप में बंगाली को रखा। संस्कृत को सम्मान देने की बात कही और संस्कृत की क्षमता को विभिन्न विद्वानों के कथन को दोहराकर सामने रखा।

माननीय **श्री एस.वी. कृष्णमूर्ति राव** ने देवनागरी अंकों के उपयोग को पूर्णतः हटाने की बात कही। इसके अतिरिक्त हिंदी में हो रहे विभिन्न अनुवाद प्रयोगों को सामने रखते हुए उसकी एकरूपता को सदन के सामने रखा।

माननीय **मो. हिफ़जुर्रहमान** (उ.प्र.) का कहना था कि गांधी जी ने कभी भी हिंदी भाषा को राजभाषा या राष्ट्रभाषा बनाने की बात नहीं की। वे हमेशा हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देना चाहते थे। हिन्दुस्तानी, जिसमें उर्दू और हिंदी का मेल है, जो हिन्दू–मुस्लिम एकता की प्रतीक है। मगर जिस हिंदी आंदोलन को मैं देख रहा हूँ, उसमें संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग होता दिख रहा है। नये–नये शब्द गढ़े जाएंगे तो आप रेडियो के लिए भी कोई शब्द बना देंगे, वह सुनने में

कितना हास्यास्पद लगेगा। जो भाषा हिन्दुस्तानी है, वह स्वतः विकसित है और भारतीय भाषा के सभी शब्दों का स्वागत करती है। उन्होंने उर्दू तथा हिंदी दोनों लिपियों में हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की।

12 सितंबर की कार्रवाई समाप्त और अगले दिन दिनांक 13 सितंबर,1949 से कार्रवाई प्रारंभ होती है।

सबसे पहले अपनी बात रखने के लिए आमंत्रित होते हैं, उत्तर प्रदेश से माननीय **श्री आर.वी. धुलेकर**, उनका ओजस्वी भाषण इस बात को लेकर था कि 15 वर्ष अंग्रेजी को जारी रखना बिल्कुल गलत है। देवनागरी अंकों का प्रयोग होना चाहिए। हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिलना चाहिए।

पश्चिम बंगाल के माननीय **पंडित लक्ष्मीकान्त मैत्र** ने संस्कृत को राजभाषा बनाने की बात कही। इस बात पर हैरानी जताई कि अनुसूची 7 (क) (जो बाद में अनुसूची 8 के नाम से जानी गई) में दी गई भाषाओं में संस्कृत का नाम नहीं है और न ही किसी अन्य सभासद ने इस बात पर आपत्ति की। मैत्र जी ने 15 वर्ष तक अंग्रेजी के बने रहने और उसके बाद संस्कृत के राजभाषा बनने के लिए अपना पक्ष रखा। मैत्र जी ने इस बात को भी इंगित किया कि तमिल, कन्नड़, बंगाली, गुजराती आदि हिंदीतर भाषी सभासदों ने अपनी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के बारे में नहीं कहा है, सोचिए कितना त्याग किया होगा उन्होंने। *(इसका अर्थ यह है कि उस समय संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने पर आम राय बन चुकी थी।)*

एंग्लो इंडियन कम्यूनिटी के सभासद माननीय **श्री फ्रैंक एंटनी** ने राजभाषा हिंदी के लिए देवनागरी लिपि की जगह 'रोमन लिपि' उपयोग करने और विश्वविद्यालय में शिक्षण का माध्यम बदलने के लिए संसद की पूर्व अनुमति लेने संबंधी प्रावधान रखने का प्रस्ताव दिया। अपने अभिभाषण में मैत्र जी की बात को आगे बढ़ाते हुए श्री एंटनी ने कहा कि अंग्रेजी से हमें नाराजगी कैसे हो सकती है, हमारी दुश्मनी अंग्रेजों से थी। वो जाने–अनजाने हमें अंग्रेजी दे गए, जिसका लाभ आज हमें अंतरराष्ट्रीय पटल पर है और हमारे सामने अंग्रेजी के साहित्य का विशाल भंडार खुल गया है। जिस हिंदी की बात यह सभा कर रही है, वह संस्कृतनिष्ठ है, जिसे आम भारतीय समझता ही नहीं। इस संविधान के हिंदी अनुवाद को ही इस सभा के हिंदी भाषी नहीं समझेंगे। सवेरा शब्द के बदले प्रातः काल उपयोग होने लगा है, इसलिए कि सवेरा को उर्दू का शब्द माना जाने लगा है। मेरा नौकर तो सवेरा पहचानता है, प्रातः काल नहीं। आम जन की भाषा संस्कृतनिष्ठ नहीं है।

ओडिशा के माननीय **श्री लक्ष्मीनारायण साहू** हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में चुनने के समर्थक थे, और इसे राजभाषा नहीं, राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के लिए अपना प्रस्ताव रखा तथा पूर्व में की गई बातों, जैसे– बंगाली को राष्ट्रभाषा बनाने, संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने और रोमन लिपि में हिंदी लिखने का विरोध प्रस्ताव किया। उनका मानना था कि यदि प्राचीन होने के कारण बंगाली को राष्ट्रभाषा बनाना है तो ओड़िया तो उससे भी पुरानी है, पुरानी तो दक्षिण की भाषाएं भी हैं। क्या इसी कारण से राष्ट्रभाषा का चुनाव होगा कि कौन कितनी पुरानी है? संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए यदि दक्षिण भारतीय भाई मानते हैं तो इस पर विचार किया जा सकता है, परंतु यह बात भी समझनी होगी कि यह बहुत कठिन भाषा है और इसे सीखने में बहुत लंबा समय लगेगा, हालांकि यह विषय नहीं है। विषय यह है कि हिंदी भाषी की संख्या बहुत अधिक है, इसलिए हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए।

मद्रास के माननीय **श्री टी.ए. रामलिंगम चेट्टियार** ने दक्षिण की समस्या को इंगित करते हुए कहा कि भाषा उनके लिए जीवन और मृत्यु जैसा विषय है। अब तक वे लोग इस बात को लेकर गौरव महसूस करते आए हैं कि केवल तमिल ही ऐसी भाषा है, जिस पर संस्कृत का प्रभाव नहीं है। वे इसे शुद्ध रखने के लिए संस्कृत शब्दों का प्रवेश भी रोकते हैं और मानते हैं कि केवल तमिल ही संस्कृत का मुकाबला कर सकती है। मैंने उत्तर भारत के सभासदों को चिंता व्यक्त करते देखा है कि यदि देवनागरी अंकों को स्वीकार्यता नहीं मिली तो वे अपनी जनता से वोट मांगने किस मुँह से जाएंगे। यदि ऐसा है तो हम कैसे अपनी जनता का सामना करेंगे, जो उनके ऊपर पूरी की पूरी भाषा ही दूसरी थोपकर आए हैं। इसलिए मेरा इस सदन से आग्रह है कि हम देवनागरी लिपि में हिंदी का समर्थन करते हैं पर हमारे वास्तविक और व्यावहारिक मुद्दे को समझें, हमें 15 वर्ष तो कम–से–कम चाहिए कि हम हिंदी सीख सकें और जब पूरी दुनिया अंकों के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को अपना रही है तो हमें भी अपनाना चाहिए।

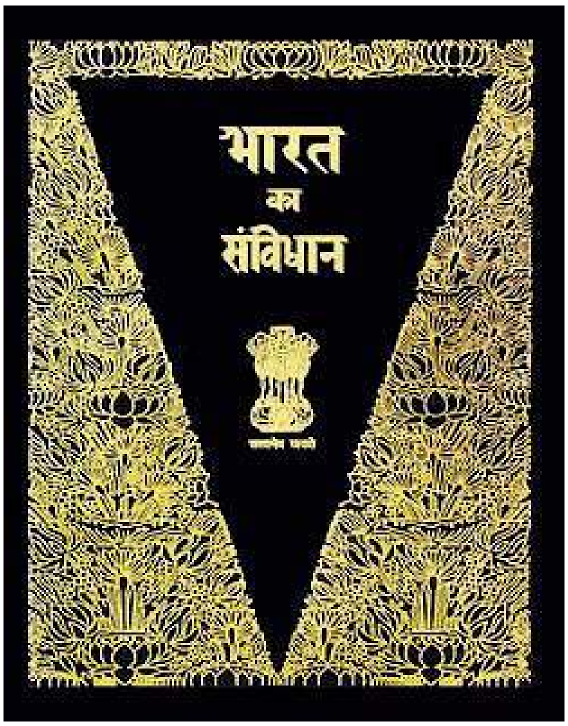

पश्चिम बंगाल के माननीय **श्री सतीश चंद्र सामंत** ने बंगाली को राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा बनाने के लिए बहुत अच्छा मामला रखा। उनका कहना था कि किसी विवाद में पड़े बिना वे कहना चाहते हैं कि वर्तमान में केवल बांग्ला ही ऐसी भाषा है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ मान्यता रखती है। इसे हार्वर्ड तथा ऑक्सफोर्ड में पढ़ाया जाता है। इसे पेरिस, म्यूनिख, मॉस्को तथा रोम के भाषा संस्थानों में मान्यता प्राप्त है। शांति निकेतन में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दकोश बांग्ला में बनाया गया है। 'ज्ञान विज्ञान' ऐसी मासिक बंगाली पत्रिका है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी शब्दों के लिए समर्पित है। केवल बंगाल में ही रबीन्द्रनाथ जी द्वारा बनाया विश्वभारती है, जो भारत और विदेशी कई भाषाओं की शिक्षा देता है। लगभग भारत की सभी भाषाओं की स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई कलकत्ता विश्वविद्यालय में होती है। वंदे मातरम् ऐसा गीत है, जो आनंद मठ से लिया गया है। कौन इस गीत के महत्व को भारत के आजादी के आंदोलन में नहीं मानता? बंगाली में अरबी, तुर्की, फ़ारसी, पुर्तगाली, फ्रेंच, अंग्रेजी शब्दों का प्रचुर भंडार है। बंगाली का टाइप राइटर बना हुआ है। बंगाली की आशुलिपि वर्ष 1915 से है। उन्होंने बंगाली का मामला सामने रखते हुए यह कहा कि इसके बाद भी यह सदन जिस भाषा को भारी बहुमत से भाषा बनाएगा, मैं उसका समर्थन करूंगा, पर उस भाषा को दो तिहाई बहुमत मिलना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के माननीय **श्री अलगू राय शास्त्री** ने हिंदी को स्वीकारने के लिए पूर्णता की बात रखते हुए देवनागरी अंकों को भी स्वीकारने की बात की और हिंदी की लिपि की वैज्ञानिकता की विस्तृत चर्चा की। साथ में पिटमेन द्वारा रचित आशुलिपि को ध्वनि प्रणाली पर आधारित होने के कारण रिपोर्टरों को उसे हिंदी में अनुकूलित करने में बहुत आसानी हुई। उन्होंने रोमन लिपि की अपेक्षा देवनागरी को बहुत श्रेष्ठ बताया। इसी प्रकार जो कमियाँ रोमन में हैं, वही उर्दू लिपि में भी होने की बात कही, जैसे– अ

हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है। **-आचार्य काका कालेलकर**

ध्वनि के लिए अलिफ लेखिम का उपयोग और रोमन में लेखिम का उपयोग अवैज्ञानिक है। यह मानते हुए कि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य बहुत महान है, हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए घोषित होना चाहिए कि उसे बोलने वाले लोग बहुत अधिक हैं और यह किसी एक प्रांत विशेष की भाषा नहीं है। अंत में उन्होंने अंग्रेजी को 15 वर्ष तक जारी रखने के पक्ष में बात रखते हुए, इस भाषा के प्रति कोई दुर्भावना न होते हुए भी राष्ट्रभाषा ऐसी भाषा होनी चाहिए, जो इस देश की हो, कहते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

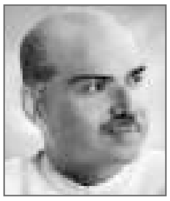

माननीय **डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी** (पश्चिम बंगाल) ने यह बात रखी कि हमारे पूर्वज जो कार्य पिछले हजारों वर्षों में नहीं कर सके, उसे हम आज करने जा रहे हैं। हम हिंदी को राजभाषा बनाना चाहते हैं। मगर यह मान लेना कि संविधान के एक अनुच्छेद में किसी भाषा को प्रविष्टि मिल जाने से बलपूर्वक उस भाषा को लाया जा सकता है, मुझे नहीं लगता संभव है। भारत के मूल में अनेकता में एकता है और आपसी समझ से ही किसी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता है। हिंदी भाषियों को इस बात की सराहना करनी चाहिए कि सदन के सभी सदस्यों ने देवनागरी लिपि में हिंदी को राजभाषा घोषित करने की संस्तुति की है।

माननीय **श्री पी.सी. चाको** (त्रावणकोर तथा कोची संयुक्त राज्य) ने कहा कि अंग्रेजी को लगातार बने रहना चाहिए, और देश की राष्ट्रभाषा का प्रश्न भविष्य की संसद पर छोड़ना चाहिए। राष्ट्रभाषा कृत्रिम रूप से नहीं स्वयं विकसित होनी चाहिए। इस सभा के पास अभी बहुत से बड़े मुद्दे हैं। देश में भुखमरी और गरीबी को दूर करने के लिए हमें कदम उठाने चाहिए। भाषा किसी पर थोपी नहीं जा सकती। जार ने रूस में लिथुएनिया की भाषा को प्रतिबंधित किया, पर दो शताब्दियों के बाद लिथुएनिया आज़ाद हुआ तो उसके 93% लोग लिथुएनिया भाषा बोलते थे। यही हाल स्पेन का है, जहाँ कातालन भाषा को 1923 में प्रतिबंधित किया गया, पर कड़े विरोध प्रदर्शन के बाद 1932 में इस भाषा को मान्यता देनी पड़ी। इसके अलावा भी भाषा के संबंध में बहुत से देशों के उदाहरण चाको जी ने दिए।

माननीय **श्री बी. दास** (उड़ीसा) ने हिंदी को राजभाषा हो जाने पर सिविल सेवाओं में हिंदी भाषियों को लाभ मिलने की बात कही। उन्हें हिंदी के लिंग निर्धारण की समस्या के कारण यह भाषा कठिन प्रतीत होती थी तथा यह लगता था कि कहीं गलत लिंग निर्धारण के कारण वे हँसी के पात्र न बन जाएँ।

माननीय **डॉ. पी. सुब्बारायण** (मद्रास) ने हिन्दुस्तानी को रोमन लिपि में स्वीकार करने और उसके अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपयोगी होने की बात को इंगित किया और अंकों के लिए अंतरराष्ट्रीय अंकों की पैरवी की। उन्होंने इस समस्या को भी इंगित किया कि उनके प्रदेश में उनके प्रति घृणा के नारे लग रहे हैं, बस इसलिए कि उन्होंने हिंदी को समर्थन किया है। इसलिए हिंदी को ऐसे लाया जाए कि उसे सभी लोग सहजता से अपना सकें।

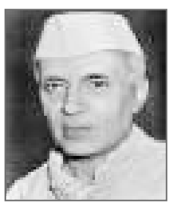

माननीय **श्री जवाहरलाल नेहरू** ने ऊपर उठे बहुत से सवालों का जवाब देते हुए प्रस्तुत प्रारूप के पक्ष में बहुत सी बातें कहीं और संशय मिटाए। इसमें उन्होंने हिंदी ही क्यों, हिन्दुस्तानी क्यों नहीं, देवनागरी या अंतरराष्ट्रीय अंक आदि मुद्दों को सरलता से स्पष्ट किया। उन्होंने अंग्रेजी के प्रति यह कहा कि भले ही यह अच्छी और महत्वपूर्ण भाषा है, पर अभिजात वर्ग को अंग्रेजी आए और बड़ा जन समूह बिना अंग्रेजी जानने वाला हो, यह सहन नहीं किया जा सकता। इसलिए, हमारी अपनी भाषा होनी चाहिए। भले अंग्रेजी को राजभाषा कहो या कुछ और, पर भारत की सबसे महत्वपूर्ण भाषा के रूप में बनी रहनी चाहिए, शायद अनिवार्य रूप से सिखाई भी जाए। क्यों, इसलिए कि जब ब्रिटिश इस देश में आए, तब के मुकाबले, अब अंग्रेजी बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो

गई है। आज बिना शक के यह कहा जा सकता है कि यह भाषा अंतरराष्ट्रीय भाषा होने के निकट है। हम और विदेशी भाषाएँ भी सीखें, मगर अपनी उपयोगिता के कारण अंग्रेजी हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण भाषा है। यह मूर्खता होगी कि हमें जो ज्ञान प्राप्त है उसे हम भूल जाएं या उसका लाभ न उठाएँ। अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में रहना होगा, भले ही इसे जानने वाले बहुत कम हों।

दिनांक 13 सितंबर और कुछ वक्ताओं के भाषण के बाद दिन समाप्त हुआ और 14 सितंबर, 1949 को सदन की कार्रवाई फिर शुरू हुई। इसमें सबसे पहले माननीय श्रीमती जी. दुर्गाबाई (मद्रास) को बोलने का अवसर मिला।

माननीय **श्रीमती जी. दुर्गाबाई** (मद्रास) ने कहा कि पिछले ढाई दशक से महात्मा गांधी के आह्वान पर हम लोग दक्षिण में हिंदी का प्रचार कर रहे हैं। हिंदी भाषा के साथ हिंदी अंकों को मनवाने के लिए यह कहा जाना कि हिंदी लागू करने की बात 90% ही मानते हो, 10% और मानिए। हमें कहा जाता है कि आपका हिंदी स्वीकारने के लिए कोई त्याग नहीं, आपको इसे स्वीकारना ही होगा। हिंदीतर भाषियों के प्रति इस रवैये से हिंदी को मनवाया जा रहा है। हम हिंदी का प्रचार करने वाले दक्षिण में बहुत विरोध झेल रहे हैं। हमारे इस प्रयास को हिंदी प्रदेश वाले नगण्य न करें और जैसा प्रारूप में दिया है, उसे मानते हुए 15 वर्ष तक अंग्रेजी और अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप को स्वीकार करें। मेरा यह भी मानना है कि जैसे प्रारूप में हिंदीतर भाषियों पर हिंदी सीखने का दायित्व है, वैसे ही हिंदी भाषियों को दक्षिण की भाषा भी सीखनी चाहिए, जैसा कि हाल ही में दिल्ली में हुए साहित्य सम्मेलन में संकल्प लिया गया है।

माननीय **श्री शंकरराव देव** (बॉम्बे) ने इस बात को रखा कि हिंदी देवनागरी लिपि में स्वीकार करना एक समझौता है। उत्तर प्रदेश और बिहार वाले यह न समझें कि इस हिंदी का अर्थ उनके प्रदेश की हिंदी होगा, हिंदी को सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का जो निदेश केंद्र को है, उसके अंतर्गत यह सबकी भाषा होगी और इसमें सभी क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव होगा। उन्होंने हिंदी के बजाय, हिन्दुस्तानी को राजभाषा बनाने की बात भी कही। उन्होंने अंत में यह कहा कि अय्यंगर जी का भाषा का फार्मूला भले ही आदर्श न हो, पर यही एक ऐसा फार्मूला है, जिस पर एकमत हुआ जा सकता है।

माननीय सरदार हुकम सिंह ने कहा कि पहले उनका देवनागरी लिपि में हिंदी को पूर्ण समर्थन था, परंतु जब से उन्होंने इस विवाद और हिंदी समर्थकों की कट्टरता और असहिष्णुता को देखा है, तब से उन्होंने अपना मत बदल लिया है और अब वह रोमन लिपि में हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हैं।

माननीय **श्री जयपाल सिंह** (बिहार) ने, आठवीं (तत्समय सात क) अनुसूची में अनुसूचित जनजाति से संबद्ध बहुप्रचलित भाषाओं– मुण्डारी, गोंडी, ओराओं को सम्मिलित करने का मत रखा। उनका मानना था कि भारत के प्राचीन ज्ञान को इन भाषाओं को सही स्थान देने से प्राप्त किया जा सकता है।

माननीय **श्री पुरुषोत्तम दास टंडन** (उ.प्र.) ने कहा कि उन्हें ऐसा लगता था कि दक्षिण भारत की नई पीढ़ी के निकट हिंदी लाने के लिए निर्धारित 15 वर्ष की अवधि बहुत लंबी है, परंतु पंत जी के कहने पर कि यह हमारे दक्षिण भारतीय भाइयों और बहनों का निर्णय है कि उन्हें कितना समय चाहिए, और वे इस बात से अब सहमत हैं। उन्होंने प्रारूप में हिंदी के प्रयोग को प्रारंभ करने तथा राज्यों की भाषा के संबंध में अधिनियम बनने तक केवल अंग्रेजी के उपयोग का विरोध करते हुए संशोधन की मांग की कि जिन राज्यों की सरकार की अनुमति से वर्तमान में उनकी भाषा है, उन्हें उस भाषा को उपयोग करने की अनुमति स्वतः होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, टंडन

राष्ट्रीय मेल और राजनैतिक एकता के लिए हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है। –लाला लाजपत राय

जी ने देवनागरी अंकों के लिए यह कहा कि दोनों प्रकार के अंक होने चाहिए, किस क्षेत्र में कौन से अंक उपयोग हों, यह निर्णय सरकार द्वारा लिया जा सकता है, जैसे– सांख्यिकी, बैंकिंग, वाणिज्य, आदि में अंतरराष्ट्रीय अंकों के उपयोग का निर्णय लेना।

माननीय **मौलाना अबुल कलाम आजाद** (उ.प्र.) ने हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया कि फ़ारसीनिष्ठ भाषा उर्दू है, संस्कृतनिष्ठ हिंदी और उर्दू, हिंदी एवं उत्तर भारत की सभी प्रादेशिक बोलियों का जिसमें मेल है, वो है हिन्दुस्तानी भाषा। इसलिए हिन्दुस्तानी को राजभाषा का दर्जा दिया जाए कि उसकी अधिक पहुँच है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अंकों के उपयोग के लिए दलील देते हुए यह कहा कि यह तो हमारे ही अंक हैं, जो अरब के रास्ते यूरोप गए। इन्हें अपनाने में तो कोई हर्ज होना ही नहीं चाहिए, मान लिया जाए कि ये अंक हमारी ईजाद न होकर यूरोप की ईजाद ही होते तो क्या इनको हम न स्वीकारते। बहुत से देश जहाँ अंग्रेजी का कोई उपयोग नहीं है, उन्होंने भी यही अंक अपनाएं हैं, इनकी उपयोगिता और सरलता के कारण। यह दिखने में भी आसान और स्पष्ट लगते हैं।

एक–दो वक्ताओं के बोलने के बाद भाषा के प्रारूप पर बहस की समाप्ति के प्रस्ताव को स्वीकृत किया गया। जब प्रारूप में संशोधन प्रस्तुत हुए तो फिर बहस आरंभ हुई और फिर कुछ देर तक वक्ताओं को सुनने के बाद पुनः बहस की समाप्ति के प्रस्ताव को स्वीकृत किया गया। अब आई मतदान की बारी :

हिंदी के बदले हिन्दुस्तानी के पक्ष में 14 वोट पड़े, बाकी बड़ी संख्या में नहीं का प्रस्ताव आया।

देवनागरी के बदले उर्दू के पक्ष में 12 वोट पड़े, बाकी बड़ी संख्या में नहीं का प्रस्ताव आया।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी के हटाने, प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, आठवीं (तत्समय सात 'क') अनुसूची के लिए अन्य 13 भाषाओं के साथ राजस्थानी का प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ।

केनेरीस के बदले कन्नड़ शब्द और पंजाबी के बाद संस्कृत को आठवीं (तत्समय सात 'क') अनुसूची में संशोधन स्वीकृत हो गए।

और इसके बाद वर्तमान में संविधान के भाग 17 में जो–जो उपबन्ध हैं, उन्हें स्वीकृत कर लिया गया।

इस स्वीकृति के बाद संविधान सभा के अध्यक्ष ने सभी को बधाई दी, उनका कहना था कि पिछले हजारों वर्षों में यह नहीं हुआ है, जिसे हमने आज प्राप्त किया है। पूरे देश के प्रशासनिक कार्यों के लिए एक भाषा का चयन बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने दक्षिण भारत के लोगों का धन्यवाद किया कि कैसे वे लाखों रुपये व्यय करके हिंदी सीख रहे हैं। उन्हें वो समय भी याद आया जब हिंदी परीक्षा के उत्तीर्ण करने के प्रमाण–पत्र वितरण करने के लिए उन्होंने एक परिवार की तीन पीढ़ियों को भी प्रमाण–पत्र वितरित किए, जिसमें दादा, बेटा और पोता तीनों को प्रमाण–पत्र मिले। दक्षिण के लोगों द्वारा हिंदी को यह बढ़ावा महात्मा गांधी के आह्वान पर दिया गया और उत्तर भारत के लोगों को इसके लिए दक्षिण भारत के लोगों के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए।

संविधान सभा ने भाषा के मुद्दे पर बहुत लंबी बहस की और उनके चर्चा के मुख्य बिन्दु थे देवनागरी अंक या अंतरराष्ट्रीय अंक, देवनागरी लिपि या रोमन लिपि या फारसी (नस्तालिक) लिपि, हिंदी या हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी का 15 वर्ष के बाद तक लंबे समय तक रहना या संविधान लागू होते ही इसे समाप्त करना। इन सब बिंदुओं पर लंबी बहस के बाद हमें देवनागरी लिपि में हिंदी मिली और अंतरराष्ट्रीय अंक मिले। इसमें बहुत से लोगों ने बहुत त्याग किया, बहुत परिश्रम किया, बहुत आलोचनाएं झेलीं, मगर स्वयं के हितों की चिंता न करते हुए राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सभी सभासदों ने हिंदी को स्वीकार किया है, इसलिए आज भी इसे उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सभी को स्वीकार करना चाहिए।

राजभाषा निरीक्षण की कार्यशैली – एक परिचय

त्रिरत्न
उप निदेशक (राजभाषा)
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, नई दिल्ली

भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय 1 से 4 के तहत वर्णित अनुच्छेद 343 से 351 के पालन में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना सुनिश्चित किया गया है। राजभाषा के पक्ष में राष्ट्रपति के आदेशों में भी सरकारी कामकाज की शैली में हिंदी को ऊंचाइयाँ प्रदान की हैं। साथ ही, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प और राजभाषा नियमावली के तहत वर्णित महत्वपूर्ण बिंदुओं के अनुपालन के फलस्वरूप संपूर्ण भारत के केन्द्रीय कार्यालयों आदि में राजभाषा हिंदी की महत्ता और उपयोगिता को पहचाना जा सकता है। इसी क्रम में, राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम, जांच बिंदु तथा निरीक्षण जैसे विभिन्न कार्यकलापों के परिणामस्वरूप ही हिंदी का लक्ष्यगामी प्रचार–प्रसार सामने आया है। इसके अलावा, राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि की गतिविधियों के अनुरूप विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं की भूमिका ने हिंदी को यथास्थान दिलाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजभाषा सम्मेलन और संसदीय राजभाषा समिति के आश्वासनों पर भी विशेष ध्यान और अनुपालन सुनिश्चित होता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजभाषा संवर्ग से जुड़े प्रत्येक अधिकारी की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने कर्तव्यों का पूर्ण सत्यनिष्ठा के साथ निर्वहन करे और राजभाषा हिंदी की प्रगति और वृद्धि के निरंतर सृजनशील बना रहे ताकि 'संघ की राजभाषा नीति' के सभी पहलुओं पर गंभीरतापूर्वक योगदान प्रकट हो सके। इसी कड़ी में, राजभाषा निरीक्षण की कार्यशैली एक विशेष भूमिका रखती है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को प्रगतिशील बनाने से संबंधित जुड़े प्रत्येक अधिकारी की यह जिम्मेदारी बन जाती है कि वह वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हर वर्ष न्यूनतम 30 प्रतिशत राजभाषा निरीक्षण करना सुनिश्चित करे। अपने-अपने कार्यालय/अस्पताल में राजभाषा निरीक्षण कर राजभाषा हिंदी की वास्तविक स्थिति का जायजा लेकर उसकी बेहतरी के लिए उपाय करे और अनुवर्ती कार्य को अंतिम रूप दे।

मित्रो, राजभाषा निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य है कि आप अपने कार्यालय के प्रत्येक व्यक्ति और उसके कार्य स्वरूप को जानने लगते हैं। उसके हर प्रकार के व्यवहार से परिचित होते हैं और उसके कामकाज की स्थिति को महसूस करते हैं। साथ ही, उस कर्मचारी के बोलचाल और आदरभाव के तौर–तरीके का भी मनोविज्ञान समझने लगते हैं। इतना ही नहीं, उस कर्मचारी के सरकारी कामकाज में शब्दों का चयन, भाषा–शैली और वर्तनी आदि विषयों पर बारीक ज्ञान अर्जन होता है। साथ ही, उस व्यक्ति विशेष के हृदय में हिंदी के प्रति मनोस्थिति का भी काफ़ी हद तक अनुमान प्रकट होता है, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति से मिलकर उसके स्वभाव को समझते हुए हिंदी के प्रचार–प्रसार की वृद्धि में सकारात्मक मूल्यांकन किया जाता है, जो राजभाषा निरीक्षण की प्रगति में लक्ष्यगामी प्रभाव छोड़ता है।

निरीक्षणकर्ता अधिकारी को यह प्रयास करना चाहिए कि वह जिस कार्यालय में निरीक्षण करने जा रहा है तो समय पर पहुंचना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। संबंधित कार्यालय में पहुंचकर सर्वप्रथम कार्यालय प्रमुख से संक्षिप्त परिचय कर राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण बातों पर कुछ चर्चा कर लेना उचित रहता है। उसके बाद उस कार्यालय की प्रत्येक शाखा के प्रत्येक कर्मचारी से मिलते हुए

राजभाषा निरीक्षण करना चाहिए। अच्छा हो कि शाखा अधिकारी को भी अपना परिचय ज्ञात होना चाहिए, जिससे कि शाखा की राजभाषा की अपेक्षित मदों पर ध्यान केंद्रित हो सकेगा और इस विषय के इतर भी अनेक प्रकार के ज्ञानवर्धन की अपेक्षाएं की जा सकेंगी। राजभाषा निरीक्षण की कड़ी में यह एक स्वस्थ परंपरा कही जा सकती है।

मित्रो, राजभाषा निरीक्षण आरंभ करने से पूर्व राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के द्वारा निर्धारित मासिक और तिमाही प्रगति रिपोर्ट के बिंदुओं के आधार पर अत्यावश्यक मदों के अनुसार तैयार निरीक्षण प्रपत्र, निरीक्षण आरंभ करने से यथासमय पूर्व संबंधित शाखा को भरकर सौंपने के निर्देश दे दिए जाते हैं ताकि आपको संबंधित शाखा में हिंदी कार्यान्वयन की वास्तविकता का जायजा मिल सकेगा। उस राजभाषा निरीक्षण के प्रति गंभीरता दिखाते हुए निरीक्षण करते वक्त उक्त प्रपत्र के अनुरूप कार्य–मूल्यांकन करना हितकर होता है और आंकड़ों की सत्यता और मौलिकता को भी मापा जा सकता है। आंकड़ों की सटीकता और तथ्यपरकता को भी आत्मसात् किया जा सकता है। प्रायः मानवीय त्रुटि आदि का भी बोधन महसूस किया जाता है।

मित्रो, राजभाषा प्रहरियों को निरंतर जागरूक और सृजनशील भावना से ओत–प्रोत होना नितांत आवश्यक है। यहां पर आलस और निरुद्देश्य भावना कृत्य का कोई स्थान नहीं है। यह सत्य है कि ज्यादातर कार्यालयों में प्राप्त मासिक प्रगति रिपोर्ट का अंश या स्वरूप भिन्न पाया जाता है, जिससे एकरूपता की कमी देखी जा सकती है। इसे सुधारने के लिए निर्देश दिए जाते हैं।

मित्रो, अधिकारी द्वारा राजभाषा निरीक्षण के समय प्रायः राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन, राजभाषा नियमावली के नियम 3, नियम 5 और मूल पत्राचार की स्थिति पर विशेष ध्यान केंद्रित रखना होता है। वार्षिक कार्यक्रम और जांच बिंदुओं की मदों पर अनुवर्ती कार्रवाई के महत्व को समझाना अति आवश्यक होता है। अर्थात् प्रत्येक कार्यालय द्वारा अपने कार्यालय को अधिसूचित और शाखाओं को विनिर्दिष्ट कराना, हिंदी बैठक का समान अंतराल में आयोजन करना, प्रत्येक तिमाही में पूर्णकालिक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना, प्रत्येक वित्तीय वर्ष में वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिंदी पुस्तकों पर 50 प्रतिशत राशि व्यय करना, पात्र कर्मचारियों को हिंदी भाषा, टंकण और आशुलिपि प्रशिक्षण दिलाना, ई–फाइल में हिंदी टिप्पणी के 80 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करना, हिंदी डिक्टेशन के 70 प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करना, विराकास की बैठक में सदस्यगण की तिमाही में कार्य प्रतिशतता जानना, नराकास की बैठकों में कार्यालय प्रमुख की उपस्थिति सुनिश्चित होना और विशेषकर अधिकारी द्वारा संबंधित कार्यालय के राजभाषा निरीक्षण की स्थिति का जायज़ा लिया जाना, अपेक्षित बिंदुओं पर अनुवर्ती कार्रवाई कर उसकी अनुपालन रिपोर्ट प्राप्त करना आदि। इसके साथ–साथ चेक जारी रजिस्टर में हिंदी में प्रविष्टियां होना, सेवा पंजी/अभिलेख के नामशीर्ष द्विभाषी में होना और उनमें प्रविष्टियां हिंदी में होने का जायज़ा लिया जाना आवश्यक होता है। इसके अलावा ध्यातव्य है कि प्रत्येक शाखा की मासिक हिंदी प्रगति रिपोर्ट पर स्टाफ के बीच अपेक्षित बिंदुओं पर चर्चा करते हुए सराहनीय और प्रशंसा भाव प्रकट करना

व्यावहारिक दृष्टि से हितकर होता है।

खास बात यह है कि हमें अधिकारी होने का एहसास तो हो किंतु जनसम्पर्क स्थापित करने की अभिव्यक्ति शक्ति समाहित होना जरूरी है, ताकि उद्देश्यपरक और सारगर्भित दिनचर्या का बोध परिलक्षित हो। इन सभी के अतिरिक्त भी कुछ अन्य बिंदुओं पर निर्णय लिया जा सकता है, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और अभिवृद्धि में सकारात्मक प्रगति अभिलक्षित होती हो, जैसे– हिंदी समाचार–पत्र व पत्रिका का प्रयोग बढ़ाना, विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कराना, धारा 3(3) व जांच बिंदु के लेमिनेटेड बोर्ड अधिकारी कक्ष आदि में लगाना, महापुरुषों की हिंदी सूक्तियों का प्रदर्शन, ई–फाइल में प्रेषक कार्मिकों के नाम व पदनाम द्विभाषी में होना, ई–फाइल में हिंदी टंकण और अनुवाद की सुविधा का लाभ उठाना। समाचार–पत्र स्टैण्ड का उपयोग करना, कार्मिकों को हिंदी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना, सभी कार्यालयीन दिशा–निर्देश व संकेत चिह्न आदि द्विभाषी होना, आदि विषयों पर भी विचार किया जा सकता है।

मित्रो, यदि हम वास्तव में राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील कार्यान्वयन की कामना से जुड़ते हैं तो हमारी कार्यशैली और व्यवहार में कोमलता, मित्रवत्ता और शिकायत शून्य मूलक दृष्टिभावना होना अत्यंत जरूरी है। हमारी सोच, दृष्टि और कर्मबोध स्वरूप जितना प्रभावकारी होगा उतना ही उसके लक्ष्यगामी और प्रेरणादायी परिणाम प्राप्त किए जा सकेंगे। एक अधिकारी वर्ग का दूसरे अधिकारी वर्ग के साथ मित्रवत और सदाचार भरा परिचय/व्यवहार उसकी अनेक संभावनाओं और अपेक्षाओं की पूर्ति में सहायक सिद्ध होता है। साथ ही, उसके आत्मबल में सापेक्ष वृद्धि करता है।

मित्रो, राजभाषा अधिकारी के व्यक्तित्व और कृतित्व में चुंबकीय आकर्षण होना चाहिए। वह जितना ईमानदार, चरित्रवान और अनुशासनपरायण होता है, उतना ही वह निष्पक्ष कार्य करते हुए बेहतरीन परिणाम देता रहता है, यही शाश्वत् सत्य है। पुष्पों की गंध भी सदैव हवा के अनुकूल ही बहती है, जबकि कुशल कार्य की पहचान चहुँ ओर जाती है। यह मन की भांति चलायमान होती है। अर्थात् किसी भी कसौटी पर खरा उतरने के लिए हीरे की तरह तपना पड़ता है।

आइए, राजभाषा हिंदी के लक्ष्यों की प्राप्ति के सहायक तत्वों का लाभ लेते हुए केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के दायित्व और कर्तव्यों का सदाशयता के साथ निर्वहन करें और राष्ट्र के योगदान में महत्वपूर्ण कड़ी बनकर ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' के निमित्त कर्मबोध ग्रहण करें।।

''राजभाषा हिंदी को अपनाओ,

और सबके प्रिय कहलाओ।।''

हिन्दी का स्तर अन्य किसी भी भारतीय भाषा की तुलना में अधिक व्यापक है। –रामवृक्ष बेनीपुरी

आंवला के अद्भुत स्वास्थ्य लाभ : एक स्वस्थ जीवन की ओर कदम

डॉ. एस. वरलक्ष्मी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी
क.रा.बी.निगम अस्पताल, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु

आंवला, जिसे Indian gooseberry भी कहा जाता है, आयुर्वेदिक चिकित्सा में हजारों वर्षों से एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह छोटा सा हरा फल अपने समृद्ध पोषण प्रोफाइल और विविध स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रसिद्ध है, जो इसे स्वस्थ जीवनशैली के लिए एक मूल्यवान जोड़ बनाता है।

आंवला का पोषण प्रोफाइल (Nutritional Profile):

आंवला विटामिन सी (Vitamin C) में असाधारण

रूप से समृद्ध है, जिसमें एक नारंगी की तुलना में लगभग 20 गुना अधिक विटामिन सी होता है। इसमें पॉलीफेनोल (polyphenols), टैनिन (tannins), फाइबर (fiber), खनिज (minerals) (जैसे कैल्शियम (calcium), फॉस्फोरस (phosphorus) और आयरन (iron)), और विटामिन ए (vitamins A) और बी–कॉम्प्लेक्स (B-complex) जैसे अन्य आवश्यक पोषक तत्व भी होते हैं।

आंवला के स्वास्थ्य लाभ :

1. प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा (Immune System Boost)

विटामिन सी (Vitamin C): आंवला की उच्च विटामिन सी सामग्री श्वेत रक्त कोशिकाओं (white blood cells) के उत्पादन को उत्तेजित करती है, जिससे शरीर की प्राकृतिक रक्षा प्रणाली मजबूत होती है।

एंटीऑक्सीडेंट (Antioxidants): इसके एंटीऑक्सीडेंट इन कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली की कार्यक्षमता बढ़ती है।

2. पाचन स्वास्थ्य

पाचन एंजाइम (digestive enzymes) : आंवला पाचन एंजाइमों को उत्तेजित करता है और पाचन तंत्र को संतुलित करने में मदद करता है।

फाइबर (fiber): आंवला में मौजूद फाइबर नियमित मल त्याग को बढ़ावा देता है और कब्ज को रोकता है।

3. हृदय स्वास्थ्य

एंटीऑक्सीडेंट (antioxidants) और अमीनो एसिड (amino acids) : आंवला के एंटीऑक्सीडेंट और अमीनो एसिड ऑक्सीडेटिव तनाव (oxidative stress) को कम करते हैं, जो हृदय रोग का एक प्रमुख कारक है।

विटामिन सी (Vitamin C) : विटामिन सी रक्त वाहिकाओं के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, जिससे प्लेक के निर्माण का खतरा कम होता है (reducing the risk of plaque buildup)।

4. मधुमेह प्रबंधन

घुलनशील फाइबर (soluble fiber) : आंवला में घुलनशील फाइबर रक्त शर्करा के अवशोषण को धीमा करता है, जिससे टाइप 2 मधुमेह वाले लोगों में रक्त शर्करा (blood sugar) के स्तर को नियंत्रित करने और लिपिड प्रोफाइल (lipid profiles) में

सुधार करने में मदद मिलती है।

5. त्वचा और बालों के लाभ

एंटीऑक्सीडेंट (antioxidants) : आंवला के एंटीऑक्सीडेंट झुर्रियों और डार्क सर्कल (dark circles) जैसे बुढ़ापे के लक्षणों को कम करते हैं।

बालों की मजबूती: यह बालों की जड़ों को मजबूत बनाता है, बालों का झड़ना कम करता है और इसके जीवाणुरोधी गुणों (antibacterial properties) के कारण खुजली से लड़ता है। (fights dandruff)

6. मस्तिष्क स्वास्थ्य (Brain Health)

एंटीऑक्सीडेंट (antioxidants) : आंवला के एंटीऑक्सीडेंट मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं (protect brain cells from damage), जिससे संभावित रूप से स्मृति और संज्ञानात्मक कार्य में सुधार होता है।

7. श्वसन स्वास्थ्य

श्वसन समस्याओं में मदद: आंवला खांसी, तपेदिक (tuberculosis) और गले के संक्रमण जैसी श्वसन समस्याओं से राहत दिलाने में मदद करता है।

8. आंखों का स्वास्थ्य

कैरोटीन सामग्री (carotene content) : आंवला में कैरोटीन की मात्रा दृष्टि में सुधार कर सकती है और निकट दृष्टि दोष (Near-sightedness) और मोतियाबिंद (cataracts) जैसी स्थितियों में मदद कर सकती है।

9. एंटी–एजिंग प्रभाव (Anti-Aging Effects)

आयुर्वेद में महत्व : आंवला को आयुर्वेद में ''रसायन'' माना जाता है, जिसका अर्थ है कि इसमें एंटी–एजिंग गुण (anti-aging properties) होते हैं।

10. विषाक्त पदार्थों को निकालना (Detoxification)

मूत्रवर्धक (diuretic) प्रभाव: आंवला मूत्रवर्धक के रूप में कार्य करता है, जिससे शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद मिलती है। (enhancing toxin elimination from the body)

आंवला का सेवन कैसे करें :

आंवला का सेवन विभिन्न रूपों में किया जा सकता है, ताकि इसके स्वास्थ्य लाभों को अधिकतम किया जा सके। यहाँ कुछ सर्वोत्तम तरीके हैं, जिनसे आप आंवले को अपने आहार में शामिल कर सकते हैं:

1. कच्चा आंवला फल

विधि : भोजन से पहले कच्चा आंवला खाएं, जिससे पाचन और हाइपरएसिडिटी (hyperacidity) में मदद मिलेगी। स्वाद बढ़ाने के लिए थोड़ा नमक मिला सकते हैं।

लाभ : विटामिन सी (vitamin C) से भरपूर, प्रतिरक्षा कार्य (immune function) और पाचन में सहायक।

2. आंवला जूस

विधि : 3–4 चम्मच आंवला जूस को समान मात्रा में पानी में मिलाकर भोजन से पहले एक या दो बार पिएं। रात में विशेष रूप से सर्दियों में सेवन से बचें।

लाभ : प्रतिरक्षा (Boosts immunity), चयापचय (metabolism) और पाचन (digestion) को बढ़ावा देता है।

3. आंवला पाउडर (चूर्ण) (Amla Powder)

विधि : भोजन से पहले शहद या पानी के साथ एक चम्मच आंवला पाउडर (powder) लें।

लाभ : पाचन और प्रतिरक्षा (immunity) को बढ़ाता है।

4. आंवला कैंडी (Amla Candy)

विधि : भोजन से पहले या बाद में 2–3 टुकड़े आंवला कैंडी (candy) खाएं।

लाभ : मीठा और खट्टा स्वाद के साथ स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

5. आंवला मुरब्बा

विधि : आंवला मुरब्बा को भोजन के साथ एक मीठा और मसालेदार साथी के रूप में लें।

लाभ : एंटीऑक्सीडेंट (antioxidants) और विटामिन (vitamins) से भरपूर होता है।

6. आंवला अचार

विधि : दिन में 1–2 चम्मच आंवला अचार लें।

लाभ : आंवला को आसानी से आहार में शामिल करने का तरीका।

7. आंवला चटनी

विधि : आंवला को धनिया, हरी मिर्च और मसालों के साथ मिलाकर एक स्वादिष्ट चटनी बनाएं।

लाभ : पाचन को बढ़ावा देता है और भोजन में स्वाद जोड़ता है।

8. आंवला–गाजर–चुकंदर जूस (Amla-Carrot-Beetroot Juice)

विधि : आंवला, गाजर और चुकंदर को मिलाकर जूस बनाएं, छानें और दोपहर के भोजन के बाद पिएं।

लाभ : विभिन्न फलों और सब्जियों के पोषण लाभों को जोड़ता है।

9. आंवला चाय

विधि : सूखे आंवला को गर्म पानी में भिगो दें और एक शांतिदायक चाय (soothing tea) बनाएं।

लाभ : एंटीऑक्सीडेंट (antioxidant) और एंटी–इंफ्लेमेटरी (anti-inflammatory) लाभ प्रदान करता है।

आंवला का सेवन करते समय कुछ सुझाव :

- **नियमितता (Consistency)** : निरन्तर सेवन से लाभ लम्बे समय तक बना रहता है। (Regular consumption is key to sustained health benefits)
- **मध्यमता (Moderation)** : पाचन संबंधी समस्याओं से बचने के लिए कम मात्रा से शुरू करें।
- **खाली पेट** : आंवला का सेवन खाली पेट करने से पोषक तत्वों का अवशोषण बेहतर होता है।

आंवला को अपने आहार में शामिल करना एक स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम है। चाहे आप इसे ताजा फल, जूस या पाउडर के रूप में लें, आंवला एक बहुमुखी और लाभकारी जोड़ है, जो पारंपरिक उपचारों और आधुनिक स्वास्थ्य पूरकों, दोनों में उपयोगी है तथा जो स्वस्थ जीवनशैली में शामिल किया जा सकता है।

हर पत्थर अनमोल है

ऋतु वासन
प्रधान निजी सचिव
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, दिल्ली

एक मंदिर में एक शिल्पकार सभी प्रकार के पत्थरों का उपयोग करता है। कुछ पत्थरों का उपयोग नींव के लिए किया जाता है और वे कभी भी बाहर दिखाई नहीं देते हैं।

वह अन्य पत्थरों से सीढ़ियाँ बनाता है। कुछ पत्थर मंदिर का शिखर बन जाते हैं। केवल वे पत्थर ही देवता बनेंगे और मंदिर में स्थापित किए जाएंगे, जो नक्काशी के लिए बेहद उपयुक्त हैं।

जब पत्थर मंदिर का हिस्सा बन जाता है, तो वह पत्थर नहीं रह जाता। वह एक मूर्ति बन जाता है, कला का एक टुकड़ा बन जाता है, वह जीवित देवता बन जाता है। सभी आवश्यक हैं, यदि सीढ़ियाँ ही नहीं होंगी तो कोई व्यक्ति मंदिर तक कैसे पहुंचेगा.. और यदि कोई नींव ही नहीं होगी तो वहाँ मंदिर कैसे बनेगा? खम्भों के बिना एक मीनार क्या कर सकती है? मूर्तिकार के लिए प्रत्येक पत्थर कीमती और मूल्यवान है।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति सभी प्रकार से अद्वितीय और परिपूर्ण है। कोई किसी से कम नहीं है। हर कोई भगवान के समीप है। प्रत्येक व्यक्ति और उसका काम अपने आप में पूर्ण है। अपने काम को और अपने आप को दूसरों से आंकना बुद्धिमता नहीं है। हम सब एक ही ऊर्जा के स्रोत हैं। घर हो या कार्यालय, समाज या देश, प्रत्येक व्यक्ति का कार्य विशेष है। कोई भी क्षेत्र हो, सफाई, गैस, राशन, कंप्यूटर, वाहन, बिजली, आग, सुरक्षा इत्यादि। सभी कहीं–न–कहीं एक दूसरे पर निर्भर हैं। कोई एक व्यक्ति अकेले सब कुछ नहीं कर सकता। इसलिए स्वयं को कम या ज्यादा आंकना सही नहीं है। अतः स्वयं से प्रेम करें, समाज से प्रेम करें, राष्ट्र से प्रेम करें तभी एक दिव्य समाज का निर्माण होगा।

संगच्छद्वम!

हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि जो काम अंग्रेजी में लिया जाता है, वह आगे चलकर हिन्दी में लिया जाए।
–सुभाष चंद्र बोस

आशा मत छोड़ना!

नवीन कुमार यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल, फुलवारी शरीफ, पटना

अंधेरा दिखे जब
चारों ओर
होता है
ऐसा कभी–कभी
जब घिरने लगें चिंताएं
मुस्कराना चाहें तभी
अंदर से रोने की
आवाज सुनाई पड़े
उठाने से पहले कदम
जब सोचना पड़े हजार
मिटाने के लिए अंधेरे को
कुछ भी चाहे सहना पड़े
मगर आशा मत छोड़ना!

जिंदगी भरी है
फूलों और कांटों
के रास्तों से
मिलता है
बहुत कुछ अनुभव
ऐसे ही रास्तों से
लगता है ऐसा कभी
कोई चमत्कार होता मेरे साथ
परिस्थिति को दे देते मात
धीमी गति से ही सही
डटे रहना
कुछ भी चाहे सहना पड़े
मगर आशा मत छोड़ना!

होती है सफलता
वहीं कहीं हमारे आस–पास
हमारी चिंताएं और हताशा
रास्ते हैं भटकाते
परेशानी जो आपको
मार नहीं पाती
वही मजबूत बना पाती है
कभी हमें ऐसा
न कहना पड़े
काश! हम भी एक दिन
इसे गले लगाते
माथा बाद में
हमें न पकड़ना पड़े
चाहे कुछ भी सहना पड़े
मगर आशा मत छोड़ना!

घर–द्वार, भूख–प्यास, नींद
जिसे लेकर त्यागे हो
अपनी नजरों से कभी
उसे मत हटने देना
परेशानी तो यहां
हर मोड़ पर है
हंसते दिखाई जो
दे रहें हैं आज
कभी–न–कभी वे भी एक दिन
इसी मोड़ से अवश्य गुजरे होंगे
इसलिए चाहे कुछ भी सहना पड़े
मगर आशा मत छोड़ना!

नैनों को रहने दो .. (भाग-3)

सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, बैरकपुर

(अनुरोध : 'नैनों को रहने दो..' शीर्षक से नेत्र एवं दृष्टि सुरक्षा के क्रम में मेरा यह दूसरा आलेख है)

नैन अर्थात आँखें, चाहे शायराना अंदाज में चर्चा करनी हो या फिर गीतों के माध्यम से इनकी बात करनी हो, हर विधा में इनको काफी महत्वपूर्ण माना गया है। हालांकि शरीर के अन्य अंग भी मनुष्य के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितनी आँखें, पर आँखों की बात ही क्या!! आँखों का महिमा मंडन करते हुए लोगों ने जाने कितनी फिल्मी धुनें और गाने बना डाले। किसी ने इसे झील कहा तो किसी ने इसे समन्दर और न जाने क्या–क्या। वास्तव में मनुष्य की आँखें जितनी कमाल की हैं, उतनी ही इसकी 'एनाटॉमी और फिजियोलॉजी।' आँखों के माध्यम से महसूस या बनाई हुई तस्वीर मस्तिष्क के पटल पर बनती है और फिर मस्तिष्क उस वस्तु के आधार पर शरीर के अन्य अंगों को तदनुसार कार्रवाई करने की आज्ञा या आदेश देता है। कंप्यूटर के समान ही मानव के नेत्र भी कार्य करते हैं। जैसे कंप्यूटर के कैमरे से ली जा रही तस्वीरें कंप्यूटर के चित्रपट पर दिखने लगती हैं और शायद यही कारण है कि हमारी आँखें हृदय और फेफड़े के बाद सबसे व्यस्ततम अंग हैं।

बदलते युग के साथ अब कंप्यूटर, मोबाइल या टैब की स्क्रीन हम सबके लिए जीविकोपार्जन और ज्ञानार्जन के साथ ही मनोरंजन का प्रमुख माध्यम बन गई है। अपने आप में यह बड़ी अच्छी बात भी है, पर इन सबके कारण आँखों को मनुष्य अधिकतम श्रम करने पर मजबूर कर रहा है। आँखों में होने वाले विभिन्न विकारों में से सबसे बड़ा जो विकार उभर रहा है वह है 'कंप्यूटर दृष्टि सिंड्रोम (डिजिटल आई सिंड्रोम)।' आज की चर्चा में हम इस बीमारी के बारे में बात करने जा रहे हैं :–

लक्षण :

1. आँखों का भारीपन या थकान का अनुभव होना।
2. आँखों में दर्द।
3. स्क्रीन पर नजर डालते ही नींद सा आना, नजर कमजोर होना या कम रोशनी में देखने में असुविधा होना।
4. सिर दर्द।
5. आँखों में जलन या बराबर खुजली की शिकायत (यह लक्षण ड्राई आई सिंड्रोम का होता है)।

निदान (Diagnosis) और उपचार : उपर्युक्त तकलीफों में अपने नेत्र चिकित्सक या स्वास्थ्य प्रदाता से संपर्क करें। आपकी जांच कर वे सही निदान और उपचार दे पाएंगे।

रोकथाम और बचाव के उपाय :–

विराम लें : अपने स्क्रीन टाइम को कम करने का प्रयास करें। लगातार स्क्रीन पर नजर डालने के कारण यह तकलीफ होती है, अतः एक निश्चित अवधि के पश्चात स्क्रीन से आपने आँखों को हटाने का अभ्यास करें। दो घंटे लगातार कंप्यूटर उपयोग के बाद 15 मिनट के लिए आँखों को आराम दें। इसके अलावा, कंप्यूटर या स्क्रीन से हर 20 मिनट पर आँखों को फिर से फोकस करने का मौका देने के लिए 20 सेकंड के लिए दूरी बना लें।

कंप्यूटर स्क्रीन का स्थान : कंप्यूटर स्क्रीन आँखों के स्तर से 15 से 20 डिग्री नीचे (लगभग 4 या 5 इंच) होनी चाहिए। इसे स्क्रीन के केंद्र से मापा जाता है और आँखों से 20 से 28 इंच की दूरी पर हो। कंप्यूटर मेज और आपके शरीर की स्थिति के संबंध में संलग्न चित्र से मार्गदर्शन लिया जा सकता है।

(चित्र साभार अमेरिका ऑप्टोमेट्रिक एसोसिएशन की वेबसाइट से संकलित।)

प्रकाश व्यवस्था : जिस कमरे में कंप्यूटर हो, वहाँ न तो बहुत अंधेरा हो और ना ही अत्यधिक चकाचौंध वाली रोशनी क्योंकि ये दोनों आँखों के लिए ठीक नहीं हैं।

चमक रोधी चश्मे का प्रयोग : स्क्रीन से निकलने वाली किरणों के कुप्रभाव से बचने के लिए चमक रोधी शीशे (Anti-glare coated glass) या तो चश्मे के रूप में या फिर आपके स्क्रीन पर लगाकर प्रयोग करें।

झपकियाँ लें : ड्राई आई सिंड्रोम से बचने के लिए कंप्यूटर स्क्रीन का प्रयोग करते समय नियमित रूप से पलकें झपकाने का अभ्यास करें, बार–बार झपकी लेने की कोशिश करें। पलक झपकने से आँखों की सामने की सतह नम रहती है।

नियमित रूप से आँखों की जांच करवाने की आदत डालें और यदि आप उच्च रक्तचाप या मधुमेह से पीड़ित हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि साल में एक बार अवश्य ही अपनी आँखों के रेटिना की जाँच करवा लें। समय–समय पर की जाने वाली जाँच से आप **'ग्लूकोमा'** जैसे जटिल रोग के प्रारम्भिक लक्षणों की पहचान कर सकते हैं तथा इसके नियंत्रण में सहयोग मिलेगा।

शेष दिवस

श्वेता सिन्हा
सहायक निदेशक (रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, बेंगलुरू

छत पर उतरती धूप दे रही संदेश
कि पहर ये अवसान का
मत मूंद नयन यथार्थ से
अब आया दिवस प्रयाण का।

छूट चलेंगे रिश्ते–नाते
कोई साथ न आएगा
कंधों पर चढ़ कर जब तू
अपने उस दर को जाएगा।

लेखा–जोखा होगा तेरे
कर डाले उन कर्मों का
क्या संगी, क्या साथी
अब कोई अर्थ नहीं इन मर्मों का।

इस तन को माटी होना है
घर है ये तो किराये का
करनी का फल भरना ही है
नहीं चलन यहाँ बकाये का।

जो दिवस बचे हैं शेष
संवारें कुछ तो अपने करम
ग्लानि नहीं हो कोई मन में
बचा लें अपना धरम।

नयन न नीचे हों प्रभु
जब तेरी शरण में आऊँ
इतनी कृपा अब करना स्वामी
गुणगान तेरा ही गाऊँ।

मेरा मन

जितेंद्र सिंह
प्रधान निजी सचिव
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, दिल्ली

उम्र तो बढ़ती है लेकिन, मन बूढ़ा होता नहीं,
उम्र कोई भी हो लेकिन, बचपना खोता नहीं,
पूछते हैं लोग अक्सर, खुश भला रहते हो क्यों,
क्या कहूं कि मन मेरा, हर बात पर रोता नहीं!

अब भी मचल जाता है मन, बारिश की बूँदें देखकर,
अब भी पिघल जाता है मन, आँसूं किसी के देखकर,
अब भी धड़क जाता है मन, काली घटायें देखकर,
मन तो है कच्चा अभी, पत्थर कभी होता नहीं,
उम्र तो बढ़ती है लेकिन, मन बूढ़ा होता नहीं........

बोलते हैं लोग मुझसे, उम्र अब तो हो गई,
हो गए हो अब बड़े, नादानियाँ सब खो गईं,
लेकिन उनको क्या कहें, मासूमियत तो रह गई,
झरने सा है मन मेरा, खाली कभी होता नहीं,
उम्र तो बढ़ती है, लेकिन मन बूढ़ा होता नहीं........

नटखट सा है मन मेरा, उम्र से अनजान है,
उम्र बड़ी, अनुभव बड़े, पर मन तो वही नादान है,
मन मेरा बचपन भरा, सुख–दुःख सब समान हैं,
समझ से परे मन मेरा, परिपक्व होता नहीं,
उम्र तो बढ़ती है लेकिन, मन बूढ़ा होता नहीं........
समझ की हैं सीमाएं, पर मन का एक विस्तार है,
हर मोड़ पर सपना नया, एक नया एहसास है,
हर हार में भी जीत है, हर पल राहत का स्वाद है,
समय सिखा दे शायद, पर ये समय की बाट जोहता नहीं,
उम्र तो बढ़ती है लेकिन, मन बूढ़ा होता नहीं.......

जिंदगी कि राह पर पत्थर तो बहुत मिलते हैं,
लेकिन स्नेह के फूल, हर मोड़ पर खिलते हैं।
जब भी देखूं किसी को, हँसते हुए मुस्कान में,
मन मेरी दुनिया बन जाता, सपनों के आसमान में।
मन है ये मासूम मेरा, यही मेरी पहचान है।
मेरी इस पहचान को, मन कभी खोता नहीं,
उम्र तो बढ़ती है लेकिन, मन बूढ़ा होता नहीं..............

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है। -लाल बहादुर शास्त्री

अस्थि पंजर की चंचलता

त्रिरत्न
उप निदेशक (राजभाषा)
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, दिल्ली

इस सांसारिक जगत में
खगोलीय और ब्लैकहोल के अचंभित खोजों के अलावा
सौरमंडल, तारों और आकाशगंगा सहित
अद्भूत और अजूबा जीवन उस के साथ
जन्म और मरण के स्रोत भी
एक पहेली के हिस्से लगते हैं।
जन्म–जन्मांतर के गतिशील खेल में
कर्म की गति के वशीभूत
इसी धरती के साक्षी बनकर
लाखों प्राकृतिक जीवन के संचरण में
पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मानव जीवन के रूप में
जीवन भोग रहे हैं।
शृंगारिक लीला की यह हमारी चंचलता
सदियों से नित नए रूप–रंग में चलायमान है
पंथ, भाषा और वेषभूषा के फलस्वरूप
संस्कार और संस्कृति में भीगकर
और श्रेष्ठता की मानक श्रेणी बनकर
मानवीय छवि को जीवंतता देती है।
किन्तु, आध्यात्मिक संदर्भ में
मानव शरीर की सभी हलचलों में
मुख्यतः बत्तीस प्रकार के विकार संचरित हैं।
पाँच इंद्रियों के प्रभावकारी तत्व
जैसे सुनना, देखना, सूंघना, बोलना, छूना के स्पंदन से
अशुभ भावना के दंभ में
विकारों की प्रकृति में वृद्धि होने पर
श्रेष्ठता का मापदंड क्षीण होता है।
फिर क्यों हम
अस्थि पंजरमयी अवलंबन के तले
शृंगारिक चेष्टाएं पल्लवित और पुष्पित कर
काम, क्रोध, राग, द्वेष और तृष्णा की छाया में
अस्थि–शिखर की ऊँचाइयों पर चढ़कर
पुनः गिरने की कड़ी में
शृंगारिक चंचलता से संलिप्त
पुनः मन दुख व कष्ट पाता है।
अब की नई शैली में
कभी भौतिक जीवन की आशा में
तो कभी अध्यात्म की परछाई में
संयोग–वियोग के गुणगान तले
जीवन जीने का रस ढूंढ़ते हैं।
मगर, गंध–सुगंध और लेपनमयी शृंगार से
शिख–नख व नख–शिख की लीला के निहित
मानो, स्थूलतः अस्थि पंजर की चंचलता प्रचंड है।
जो निरंतर ही
वायु के वेग से बुझ जाने की भांति
आयु के क्षय होने की भावना से
मरण स्मृति के रूप में
बुझ जाने की गति में है।
वही, शुभ कर्म की छाया में
पुण्य की स्मृति के संग
शील, श्रद्धा, उद्यम, स्मृति और समाधि के आसन पर चढ़कर
सदैव कल्याण गति प्रदान कर
शोक संतप्त से विरत रहकर
शासक धर्म के सारथी बनकर
केवल अपनी शरण के अनुगामी होकर
चेतन और अचेतन के अंतर को जान
फिर, शुभ व अशुभ को परखकर सदा
निर्वाणगामी पद को पा जाओ।
जन्म–मरण से मुक्त हो जाओ।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने आदर्श नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और पुरस्कारों से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थों के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

एक अफसोस ऐसा भी

अमरदीप सिंह मोगा
अवर श्रेणी लिपिक
शाखा कार्यालय, क.रा.बी.निगम, मोगा, पंजाब

ऑपरेशन कक्ष की ओर जाते हुए रजत को जोर–जोर से रोते हुए देख सभी चिकित्सक हैरान परेशान हो रहे थे। उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि कल जिस रजत के चेहरे पर बीमारी से होने वाली अपनी मौत की खबर सुन कर भी कोई सदमा कोई उदासी नहीं आ रही थी, बल्कि उसके चेहरे पर मौत सुन कर भी नूर था, आज सर्जरी के लिए जाते समय वह इतना क्यों विलाप कर रहा है। चिकित्सक न उसकी मनोदशा तब समझ पाए थे, न ही अब। रजत को अचानक सिर में तेज दर्द से बेहोश होने की वजह से एक दिन पहले ही अस्पताल लाया गया था। जांच उपरांत चिकित्सकों ने रजत को बताया था कि मस्तिष्क में कर्क रोग होने की वजह से वह मौत की ओर अग्रसर है व तत्काल ही सर्जरी के माध्यम से जान बचाने की कोशिश की जा सकती है। परंतु आज सर्जरी के वक्त जाते हुए रजत को बदहाल देख एक चिकित्सक ने जिज्ञासावश पूछ ही लिया कि अगर सर्जरी नहीं करवानी है तो बता दो? क्योंकि कल मौत का समाचार सुनकर बिल्कुल विचलित नहीं थे, पर आज इतना रो रहे हो, हमें यह दोनों हालात समझ नहीं आ रहे तुम्हारे।

रजत ने बोला–डॉक्टर साहब, कल जब आपने मुझे मेरी होने वाली मौत के बारे में बताया तो कुछ ही क्षणों में मेरी अब तक की ज़िन्दगी मेरी आँखों के सामने से गुजर गई। और अपने अब तक के जीवन में मुझे ऐसा कोई लम्हा या किस्सा याद नहीं आया जिसमें मैंने किसी का कोई बुरा किया हो या चाहा हो। अपना काम मैंने पूरी ईमानदारी से किया। मुझे अपनी ज़िन्दगी से कोई शिकवा अथवा शिकायत नजर नहीं आई। मन में आया कि भगवान के पास जानेवाला हूँ पर मुझे अपने जीवन की किसी गतिविधि पर कोई मलाल नहीं है, जिस वजह से भगवान से आँखें मिला कर भेंट करूंगा। इसी वजह से कल आपको मेरे चेहरे पर वो सुकून, वो संतुष्टि देखने को मिली होगी।

फिर चिकित्सक ने वार्तालाप में रुचि दिखाते हुए पूछा कि चलो यह तो समझ आ गया, पर फिर अगर यही बात है तो तुम आज इतना रो क्यों रहे हो।

फिर रजत ने बोलना शुरू किया–आज जब मुझे सर्जरी के लिए लेकर आ रहे थे तो मेरे मन में विचार आया कि शायद मैं ठीक हो जाऊँगा। ऐसा भी हो सकता है, जैसा मुझे बताया गया है कि बचने की उम्मीद कम है, तो सर्जरी कामयाब न हो और मैं अस्पताल के बिस्तर पर ही दम तोड़ दूँ या फिर मैं ठीक हो जाऊँ, परंतु अपनी याददाश्त खो सकता हूँ। जैसे ही मुझे मरने और याददाश्त खोने का ख्याल आया, तो मुझे अपने जीवन के कुछ लोग याद आए। कुछ मेरे अच्छे दोस्त, कुछ रिश्तेदार, कुछ सहकर्मी और कुछ शुभचिंतक, जिन्होंने मेरे जीवन संघर्ष में मुझे सहयोग दिया और मेरा मार्गदर्शन किया था। वे लोग मेरे लिए बहुत खास थे। परंतु अपने स्वभाव की वजह से मैं उन्हें कभी यह बता नहीं पाया कि मेरे लिए वो सब अनमोल हैं। उनके साथ के लिए उन्हें धन्यवाद कहना बहुत छोटा शब्द है, इसलिए मैंने उन्हें कभी धन्यवाद भी नहीं कहा। परंतु आज मैं दिल खोलकर उनको बताना चाहता हूँ कि मैंने कभी उन्हें भुलाया नहीं है और हमेशा उनका ऋणी रहूँगा। परंतु ज़िन्दगी की व्यस्तता के चलते अब कुछ लोगों से संपर्क नहीं रहा है और कुछ लोग इस दुनिया में नहीं रहे। इसलिए आज मुझे अपनी बेबसी पर रोना आ रहा है डॉक्टर साहब कि शायद अब मैं उन्हें कभी अपने मन की बात नहीं बता पाऊँगा। मेरी विनती है कि अगर मुझे

कुछ हो गया तो मेरे अपनों को मेरा यह संदेश जरूर दे देना, डॉक्टर साहब।

रजत की बात सुन सभी चिकित्सकों को अहसास हुआ कि इस मामले में वह सभी भी रजत के जैसे ही हैं, अपने जीवन की भागदौड़ में उन्होंने भी बहुत से साथियों से कभी दिल खोलकर बात नहीं की, कभी उन्हें दो शब्द बोल प्रोत्साहित नहीं किया। जीवन में अगले पल का कोई भरोसा नहीं होता और अब सभी चिकित्सक यही सोच रहे थे कि वे भी रजत की तरह मलाल के साथ मरना नहीं चाहते। अतः सभी चिकित्सकों ने प्रतिज्ञा ली कि वे सभी अपने शुभचिंतकों/दोस्तों/पारिवारिक सदस्यों के साथ समय बिताएंगे व उनके सहयोग के लिए शुक्रिया कर प्रोत्साहित जरूर करेंगे।

मेरी तीन कविताएं

(1)

चिट्ठियों का दौर

ले चलो वापस हमें उस दौर में साहब
वो खत वाला जमाना बड़ा लाजवाब था
बहुत शिद्दत से लिखे जाते थे जो लफ्ज
हर सत्र, एक नायाब अहसास था।
नए जमाने के ये जो नए तराने हैं
मुझ नादान को कहाँ समझ आते हैं
यूं दो पल चला कर अंगुलियाँ फोन पर
गहरे जज़्बात आजकल कहाँ लिखे जाते हैं।

(2)

वक्त की शाख

वक्त की शाख पर, कुछ लम्हे, छुपा कर आया था
कुछ अच्छी, कुछ बुरी, यादें सजा कर आया था
देखा खुद को कभी हंसते, कभी रोते हुए,
देखा खुद को कभी हंसते, कभी रोते हुए,
रास्ते में वो सारे, अहसास, बिछा कर आया था।
वक्त की शाख पर, कुछ लम्हे, छुपा कर आया था।
छुपा रखे थे गम, जो थे सबक जिंदगी के
आंसुओं को मोती, बना कर आया था
वक्त की शाख पर, कुछ लम्हे, छुपा कर आया था।
मोह गई मन को, फिर एक भीनी सी महक
खुशियों के भी कुछ फूल, लगा कर आया था
वक्त की शाख पर, कुछ लम्हे, छुपा कर आया था।

(3)

रखिए जरा सा

खुश रहना है तो रखिए
मुस्कान लबों पर
आँखों को नम,
जरा कम रखिए।

आनंद लेना हो अगर
रास्तों का, सफर का,
पास अपने समान
जरा कम रखिए।

अगर चाहिए सुकून
ऐ नादान तुझे,
तो जो बहुत हो अरमान
जरा कम रखिए।

सिर्फ कांटे ही तो
नहीं बख्शे जिंदगी ने,
तो हर पल याद गम,
जरा कम रखिए।

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परंतु मेरे देश में मेरी भाषा की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।
-आचार्य विनोबा भावे

भारत : एक संक्षिप्त यात्रा

अर्पित तोमर
सहायक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, नन्द नगरी, दिल्ली

भारत में घूमने के लिए अनेक जगहें हैं, जहाँ छुट्टियों में जाया जा सकता है। जिस भी दिशा में घूमने के लिए चले जाइए, कुछ–न–कुछ दर्शनीय स्थल अवश्य मिल जाएंगे। प्रत्येक राज्य में आध्यात्मिक, पर्यावरणीय, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप में पर्यटन अथवा दर्शनीय स्थल उपलब्ध हैं।

1. **आध्यात्मिक** :– आध्यात्मिक रूप से उत्तर में, जम्मू–कश्मीर में माता वैष्णो देवी, अमरनाथ, महामाया, ममलेश्वर, मार्तंड सूर्य, गुलमर्ग महारानी, शंकरगौरीश्वर, खीर भवानी, शंकराचार्य आदि मंदिर है। वहीं हिमाचल प्रदेश में संकट मोचन, तारा देवी, जाखू, नैना देवी, ज्वाला देवी, हिडिंबा देवी, चामुंडा देवी आदि मंदिर हैं। उत्तराखंड को देवभूमि भी कहा जाता है, क्योंकि राज्य में चार धाम– केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री के अलावा जगेश्वर, तुंगनाथ, नीलकंठ महादेव, धारी देवी, चितई गोलू देवता व नन्दा देवी मंदिर प्रमुख हैं। हरिद्वार में हर की पौड़ी प्रसिद्ध है, जहां श्रद्धालु गंगा स्नान के लिए आते हैं। भारत में हिंदुओं के लिए 12 ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ व सभी छोटे–बड़े मंदिर आते हैं, जहां श्रद्धालुओं की भारी संख्या पूरे वर्ष लगी रहती है। मुस्लिमों में तमाम ऐसी मस्जिदें हैं, जहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रहती है। वहीं सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध आदि के पूजा स्थल हैं, जो पूरे भारत में फैले हुए हैं।

   महाकुंभ 2025 :– महाकुंभ 2025 एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन था, जो भारत में आयोजित किया गया। यह हिंदू धर्म का सबसे बड़ा और पवित्र मेला है, जो हर 12 वर्षों में चार प्रमुख तीर्थ स्थलों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक) में से किसी एक पर आयोजित किया जाता है। यह जनवरी 2025 से अप्रैल 2025 तक (विशिष्ट तिथियां चंद्र कैलेंडर के अनुसार निर्धारित की जाती हैं) उस संगम किनारे पर आयोजित किया गया, जहां गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों का संगम है। इसे हिंदू धर्म में आत्मशुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के लिए विशेष रूप से शुभ माना जाता है। कुंभ मेले का सबसे बड़ा आकर्षण शाही स्नान होता है। इसमें विभिन्न अखाड़ों के साधु–संत पवित्र डुबकी लगाते हैं। देश–विदेश से करोड़ों श्रद्धालु और साधु–संत इसमें भाग लेते हैं। कुंभ मेले के दौरान कई धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। मेले में भारतीय परंपरा, संगीत, नृत्य और कला का भव्य प्रदर्शन किया जाता है। सरकार और प्रशासन इस आयोजन के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियां कर रहे हैं, जैसे– बेहतर यातायात और परिवहन की व्यवस्था। आधुनिक चिकित्सा सेवाएं, सुरक्षित और साफ–सुथरे स्नान घाट, ठहरने और खाने–पीने की सुविधाएं, आदि उपलब्ध रहती हैं।

2. **पर्यावरणीय** :– भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी व कच्छ से अरुणाचल तक विभिन्न भौगोलिक संरचनाएं हैं, जैसे– उत्तर से पूर्वोत्तर तक हिमालय फैला है। 7516.6 कि.मी. कुल तटीय रेखा है, जिसमें 5422 कि.मी. मुख्य भूमि की व 2094 कि.मी. द्वीप समूह की है। अरब सागर पश्चिम में, बंगाल की खाड़ी पूर्व में व हिन्द महासागर दक्षिण में मौजूद हैं। भारत में दो मरुस्थल हैं, लद्दाख (ठंडा) व थार (गर्म)। विश्व में भारत एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ बाघ व शेर दोनों अपने प्रकृतिक आवास में पाए जाते हैं। एशियाई शेर गुजरात के गिर में रहते हैं, वहीं बाघों के लिए रणथंबोर, सरिस्का, दुधवा,

अमनगढ़, पीलीभीत, रानीपुर, कान्हा, जिम कॉर्बेट, तडोबा–अंधेरी, पेंच, बांधवगढ़, बांदीपुर, नगरहोल, कांजीरंगा, पन्ना, सतपुड़ा, पेरियार, सुंदरबन, इंद्रावती, राजाजी, मानस आदि राष्ट्रीय उद्यान व संरक्षित क्षेत्र है। इसके अलावा कुछ पक्षी अभयारण्य भी हैं, जैसे– ओखला, सिकंदरपुर, अरावली जैव–विविधता पार्क, भरतपुर, सुल्तानपुर, सलीम अली, वेदांतगल, कुमारकोम, चिल्का झील, नाल सरोवर आदि। इसके साथ ही कई विलुप्तप्राय प्राणियों को इन्हीं प्राकृतिक आवासों में ही रखा जाता है।

3. **ऐतिहासिक** :– भारत में कई ऐतिहासिक इमारतें हैं, जिनका निर्माण अनेक राजा–महाराजा, सुल्तानों, अंग्रेजों ने करवाया है। भारत का इतिहास 5000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। यहाँ अनेक राजा रहे हैं व सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर ब्रिटिश काल तक अनेक ऐसी इमारतें हैं, जो भारत की राष्ट्रीय धरोहर हैं, जैसे– हड़प्पा सभ्यता के लोथल, धौलावीरा, कलीबंगा आदि। भारत में अनेक संग्रहालय हैं, जो हमारे इतिहास को दर्शाते हैं। ताजमहल, आगरा व दिल्ली का लाल किला, रानी की वाव, गेटवे ऑफ इंडिया, इंडिया गेट, अजंता, एलोरा, एलीफेंटा की गुफाएँ आदि।

4. **सांस्कृतिक** :– भारत सांस्कृतिक विविधता का देश है। भारतीय संस्कृति को जानने के लिए पूरे देश की यात्रा करनी पड़ेगी, क्योंकि जिस भी दिशा में जाएँ, वहाँ कि भाषा, पहनावा, रहन–सहन, पूजा पद्धति, नृत्य आदि बदलते हैं। उत्तर में जहाँ कश्मीरी, हरियाणवी, हिंदी, पंजाबी, डोगरी, अवधी, ब्रज, उर्दू, पहाड़ी, नेपाली आदि भाषाएँ बोली जाती हैं, वहीं उनका पहनावा भी अलग है। जम्मू और कश्मीर की पोशाकें अपनी कढ़ाई और जटिल डिजाइनों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो क्षेत्र की संस्कृति और परिदृश्य की समृद्धि को दर्शाती हैं। कपड़ों का स्वरूप क्षेत्र की ठंडी जलवायु का मुकाबला करने के लिए डिजाइन किया गया है। अधिकांश वस्त्र ऊनी, जटिल कढ़ाई वाले रेशम और कपास से बने होते हैं। पंजाब में पुरुष मुख्यतः पगड़ी, कुर्ता–पाजामा, तहमद पहनते हैं व महिलाएं कुर्ती, पटियाला सलवार, चुन्नी आदि पहनती हैं। साथ ही पंजाब में कई नृत्य भी हैं, जैसे– भांगड़ा, गिद्दा, झूमर, लुड्डी, सम्मी, किकली, और मालवई गिद्दा आदि हैं, जो स्त्री व पुरुष दोनों करते हैं। उत्तर प्रदेश में पुरुष कुर्ता–पजामा व महिलाएं सलवार–सूट, साड़ी ही पहनती है। भारतीय व्यंजन अपने स्वाद और मसालों के लिए प्रसिद्ध हैं। हर राज्य की अपनी अलग विशेषता है। उत्तर भारत में तंदूरी रोटी, पराठा, और बिरयानी का स्वाद अद्वितीय है, जबकि दक्षिण भारत में डोसा, इडली, और सांभर का आनंद लिया जाता है। पश्चिमी भारत में ढोकला और पूरण पोली प्रसिद्ध हैं, जबकि पूर्वी भारत में रसगुल्ला और मछली करी लोकप्रिय हैं।

कहा जाता है कि 'कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी' यह भारत के लिए सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि भारत ही एक ऐसा देश है, जहां इतनी विविधता है कि अपने अंदर ही कई देश समेटे हुए है। यही विशेषता भारत को विश्व में अद्वितीय बनाती है।

दिल का स्थान - राजस्थान

जसराम मीना
अवर श्रेणी लिपिक
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, दिल्ली

राजस्थान भारत का एक महत्वपूर्ण प्रांत है। यह 15 मार्च, 1949 को भारत का एक ऐसा प्रांत बना, जिसमें तत्कालीन राजपूताना की ताकतवर रियासतें विलीन हुईं। इसमें से धौलपुर करौली यादव शासकों की व टोंक मुस्लिम रियासत थी।

राज्य की राजधानी जयपुर है। भौगोलिक विशेषताओं में पश्चिम में थार मरुस्थल और घग्गर नदी का अंतिम छोर है। विश्व की पुरातन श्रेणियों में प्रमुख अरावली श्रेणी राजस्थान की एक मात्र पर्वत श्रेणी है, जो कि पर्यटन का केन्द्र है, माउंट आबू और विश्वविख्यात दिलवाड़ा मंदिर सम्मिलित करती है। राजस्थान में तीन (रामगढ़ विषधारी के जुड़ने के बाद चार) बाघ अभयारण्य, मुकंदरा हिल्स, रणथम्भौर एवं सरिस्का हैं और भरतपुर के समीप केवलादेव उद्यान है, जो सुदूर साइबेरिया से बड़ी संख्या में आने वाले सारसों की स्थानीय प्रजाति के अनेकानेक पक्षियों के लिए संरक्षित–आवास के रूप में विकसित किया गया है।

13वीं शताब्दी के पूर्व तक पूर्वी राजस्थान और हाड़ौती पर मीणा तथा दक्षिण राजस्थान पर भील राजाओं का शासन था। उसके बाद मध्यकाल में राजपूत जाति के विभिन्न वंशों ने इस राज्य के विविध भागों का नामकरण अपने–अपने वंश, क्षेत्र की प्रमुख बोली अथवा स्थान के अनुरूप कर दिया। ये राज्य थे– चित्तौड़गढ, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, (जालोर) सिरोही, कोटा, बूंदी, जयपुर, अलवर, करौली, झालावाड़, राजा महाराणा प्रताप और महाराणा सांगा, महाराजा सूरजमल, महाराजा जवाहर सिंह, वीर तेजाजी अपनी असाधारण राज्यभक्ति और शौर्य के लिए जाने जाते है। पन्ना धाय जैसी बलिदानी माता, मीरा जैसी जोगिन यहां की एक बड़ी शान है। कर्मा बाई जैसी भक्तिन जिसने भगवान जगन्नाथ जी को हाथों से खिचड़ा (खिचड़ी) खिलाया था।

करौली, राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित एक छोटा शहर और जिला है, जो अपनी समृद्ध इतिहास, कला और संस्कृति के लिए जाना जाता है। इसे "मंदिरों की नगरी" भी कहा जाता है। करौली रियासत की स्थापना 1348 में राजा अर्जुनपाल ने की थी। यह जादौन राजपूत राजवंश से संबंधित थी, जो भगवान कृष्ण के वंशज माने जाते हैं। करौली, मत्स्य साम्राज्य का हिस्सा था, जो प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था।

करौली में कई दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें शामिल हैं– करौली किला, मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी मंदिरय सवाई माधोपुर के पास रणथंबोर राष्ट्रीय उद्यान बेहद प्रसिद्ध है। करौली की संस्कृति समृद्ध और विविध है। यहां के लोग अपने पारंपरिक वस्त्रों, संगीत और नृत्य के लिए जाने जाते हैं। करौली में कई त्योहार मनाए जाते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं– मदन मोहन मंदिर का मेला, कैलादेवी मंदिर का मेला। करौली की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। यहां मुख्य रूप से गेहूं, चावल और दालें उगाई जाती हैं। इसके अलावा, यहां पशुपालन और मछली पालन भी एक महत्वपूर्ण उद्योग है। करौली में कई छोटे उद्योग भी हैं, जैसे कि पत्थर की नक्काशी, हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग। करौली एक सुंदर और समृद्ध शहर है, जो अपने इतिहास, कला और संस्कृति के लिए जाना जाता है।

पांचना बांध

पांचना बांध करौली जिला मुख्यालय से 3 कि.मी. दूर स्थित है। यह राजस्थान का एकमात्र मिट्टी से बना बांध है। यह करौली जिले का सबसे बड़ा बांध है, जो पांच नदियों के संगम पर स्थित है। इस बांध से एक नदी, जिसे गंभीर नदी के नाम से जाना जाता है, निकलती है। इस बांध पर करौली–हिंडोन मार्ग बना हुआ है, जिसे अंजनी का पुल के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इस पुल के समीप पहाड़ी पर अंजनी माता का मंदिर है।

मौन शब्द

शैफाली दुबे
फार्मासिस्ट (एलोपैथी)
क.रा.बी.निगम अस्पताल, जाजमऊ, कानपुर

शब्द मौन हैं
लेकिन ये कौन है जो कुछ कहना चाहता है
शोर ही है जो शोर में बह जाना चाहता है।

शून्य से रची माया,
शून्य से घिरी काया,
इस अनंत यात्रा में ये कौन है?
जो फिर शून्य हो जाना चाहता है।

ना ऊषा का गान हो, ना हो तिमिर का स्वर
स्वच्छ अविरल आनंदित राग में,
शब्द एक बार फिर निःशब्द हो जाना चाहता है।

जो प्रवाह अग्नि अमूर्त है,
ले उसमें आहुति रक्त,
निर्लेप अश्रु हो जाना चाहता है।

स्पंदित ऊर्जा भंवर ले ज्वार,
गहन सरल पीयूष से निःस्वरित मिल
तरंगित हो जाना चाहता है।

शांत प्रवाह निश्छल बहे
इसलिए शब्द फिर मौन हो जाना चाहता है।

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी के अध्ययन में लगाएं। -विनोबा भावे

कुंभ स्नान

प्रवीण कुमार
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, हरियाणा

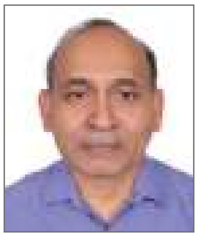

चौथी या पांचवीं कक्षा में कुंभ पर एक पाठ था। तभी से मन में इच्छा थी, बड़े होकर कुंभ में जाएंगे। परंतु पहले आर्थिक कारणों से और बाद में पारिवारिक कारणों से यह इच्छा कभी पूर्ण ना हो पाई। जब कुंभ 2025 के विज्ञापन आने शुरू हुए तो मन ने कहा कि इस बार तो जरूर जाएंगे क्योंकि पता नहीं अगले कुम्भ तक स्वास्थ्य साथ दे या नहीं।

स्कूल के जमाने के दो दोस्तों से बात की और उन्होंने तुरंत हाँ में हाँ मिला दी और हमने कुंभ जाने की योजना बनानी शुरू कर दी। परंतु जैसे ही योजना थोड़ा मूर्त रूप लेने लगी, तीनों की पत्नियों ने आपस में चर्चा करके निर्णय किया कि वे भी हमारे साथ जाएंगी। इसी बीच हमारे एक पुराने अधिकारी श्री आर.के. नायक जी जो वर्तमान में परम मित्र बन चुके हैं, ने भी जोर डाला कि वे भी हमारे साथ कुंभ जाना चाहेंगे। चुनाव ड्यूटी के चलते हमारे एक साथी सपत्नीक कुंभ नहीं जा पाए। इस तरह पांच व्यक्तियों का काफिला कुंभ के लिए तैयार हुआ मैं, हमारी जीवन संगिनी प्रीति, बचपन के मित्र नरेश, उनकी धर्मपत्नी हमारी शशि भाभीजी और नायक साहब।

रेल की टिकट न मिलने के कारण और कैब में 14–16 घंटे की यात्रा में होने वाले कष्ट को ध्यान में रखते हुए स्लीपर वोल्वो बस से प्रयागराज जाने का निर्णय किया गया। मेक माय ट्रिप से बस के साथ–साथ एक छोटा सा गेस्ट हाउस भी बुक कर दिया गया। 6 फरवरी की शाम 4:30 बजे दिल्ली के कश्मीरी गेट बस अड्डे से स्लीपर बस में यात्रा प्रारंभ की। ये जीवन की पहली स्लीपर बस यात्रा थी। यात्रा सुखद और आरामदायक थी, सोते हुए पूरा रास्ता कैसे निकल गया मालूम ही नहीं पड़ा। सुबह 8 बजे प्रयागराज से कुछ पहले नवाबगंज टोल प्लाजा पर बस ने हमें उतार दिया। नवाबगंज से आसानी से ऑटो मिल गया, जिसने हमें 1 घंटे में हमारे गेस्ट हाउस जो कि लगभग 27 किलोमीटर दूर था, छोड़ दिया। नवाबगंज से मुश्किल से 5 किलोमीटर चले होंगे कि पुलिस ने रूट डायवर्ट कर दिया क्योंकि आगे जाम था। दूसरी सड़क पर भी भयंकर जाम था। ऑटो वाले ने ऑटो को एक तंग–सी गली में मोड़ दिया। थोड़ी देर गली में चलकर आगे खेतों के बीच पगडंडियों से होता हुआ पुनः एक खाली से हाइवे पर पहुंचा दिया। एक चैन की सांस ली।

गेस्ट हाउस में फ्रेश होकर बाहर निकले। बाहर ही बोट क्लब के लिए रिक्शा मिल गया। हल्का नाश्ता करके हम गंगा घाट की तरफ आगे बढ़े। वहां काफी भीड़ थी। नावें आ–जा रही थीं। परंतु कोई भी नाव नई सवारी लेने को तैयार नहीं थी। सब का एक ही कहना था कि हवा तेज चल रही है और नौका नहीं चल सकती। नौका वालों की बहुत मिन्नतें करने के बाद उन्होंने मुश्किल से हां भरी कि कुछ देर बाद वे जा सकते हैं, परंतु त्रिवेणी संगम तक जाने के लिए ₹3000 प्रति सवारी की मांग की, जो कि हमारे हिसाब से बहुत ज्यादा था। इसलिए बहुत देर तक बहुत सारे नाव वालों से दाम पता करने का प्रयास करते रहे, परंतु अंत में ₹3000 प्रति व्यक्ति की दर से देना ही पक्का हुआ।

यात्रा प्रारंभ करने के बाद पता लगा कि जहां से हमने नाव ली है, वह गौ घाट है और यहां से त्रिवेणी संगम 3 किलोमीटर से अधिक दूरी पर है। संगम तक पहुंचने में डेढ़ घंटा लगा। एक लंबी नौका यात्रा हो गई। वहां पर रेत का टापू सा बना हुआ था। उसी के किनारे ही सैकड़ों नाव वाले नाव लगाए हुए थे। इस टापू पर महिलाओं के लिए वस्त्र बदलने के कक्ष भी बने हुए थे। स्नान–ध्यान में लगभग डेढ़ घंटा लग गया। नाव से वापस आते–आते लगभग 5 घंटे लग गए। समय को देखते हुए ऐसा लगा कि ₹3000 सवारी ज्यादा तो है, परंतु बहुत ज्यादा नहीं

है। होटल वापस आते समय रास्ते में भोजन ग्रहण किया और जल्दी सो गए।

पहले दिन कुंभ स्नान तो बहुत अच्छी तरह हो गया, परंतु मेला देखने का मौका नहीं मिला। इसलिए अगले दिन कुंभ मेले की तरफ जाने का निर्णय किया। प्रातः 6:00 बजे अपने होटल से निकले और रिक्शा से मेला परिसर पहुंच गए। मेला परिसर के द्वार तक रिक्शा ने पहुंचा दिया। परंतु वहां से घाट 2 किलोमीटर दूर था। हमारे आगे भी एक जन–समुद्र चल रहा था और हमारे पीछे भी जन–समुद्र आ रहा था। हमारी स्थिति गंगा की लहरों की तरह थी जो अपने आप एक दूसरे के साथ चल रही थी।

इसी बीच एक रेहड़ी रिक्शा दिखाई दी, जिसने सामान भरने की जगह कंबल बिछा रखा था। हमें लगा आज इसका उपयोग सवारी ढोने के लिए किया जा रहा है और हम एकदम उसकी और आकर्षित हो गए। हमारे दल में सभी सदस्य वरिष्ठ नागरिक थे और अधिक चलने की क्षमता नहीं रखते थे। मौका लगते ही हमने रिक्शा वाले से घाट तक छोड़ने का दाम पक्का किया और पांचों लोगों ने जिंदगी में पहली बार रेहड़ी यात्रा का आनंद लिया। रेहड़ी यात्रा के दौरान आसपास के लोग हमारी रेहड़ी को यूएफओ (UFO) अन आइडेंटिफाई फ्लाइंग ऑब्जेक्ट और हमें एलियंस (Aliens) की तरह देख रहे थे। शीघ्र ही हम गंगा के तट पर पहुँच गए और अन्य श्रद्धालुओं की तरह किनारे पर ही स्नान किया क्योंकि त्रिवेणी घाट भीड़ को देखते हुए नाव बंद थी। यहां अच्छी खासी भीड़ थी क्योंकि आज एकादशी स्नान भी था। भीड़ निरंतर बढ़ती जा रही थी। अति सौभाग्यवश वापसी में हमने लेटे हुए हनुमान जी, अक्षय वट एवं सरस्वती कूप के भी दर्शन किए और पुनः जन–समुद्र का हिस्सा बन गए।

रास्ते में छोले–पूरी और जलेबी का नाश्ता किया। अभी भी रिक्शा मिलने का स्थान डेढ़ किलोमीटर दूर था और पैर जवाब दे चुके थे। आसपास देखा एक बाइक सवार अकेला जा रहा था। उससे मोल– भाव किया। दो–दो सवारी एक बार बाइक पर बैठकर बाहर तक आए और बाहर आने पर रिक्शा भी आसानी से मिल गया। वापसी होटल आकर दो–तीन घंटे विश्राम किया। सभी अपने भाग्य को सराह रहे थे कि बिना किसी विशेष तकलीफ के कुंभ में दो बार स्नान करने का सुअवसर मिल गया। इस बीच नायक साहब ने अपनी मधुर आवाज में तीन भजन सुना कर सब का मन मोह लिया।

वापसी की बस सायं 7:30 बजे की थी। समय का पर्याप्त अंतराल रखते हुए हम 4:30 बजे कार से नियत स्थान– सांसों टोल प्लाजा के लिए निकल पड़े। जैसे–जैसे आगे बढ़े ट्रैफिक का दबाव बढ़ता ही जा रहा था और उसके साथ–साथ हमारे हृदय की गति भी बढ़ती जा रही थी। बस का छूटना लगभग निश्चित हो चुका था। परंतु गंगा पुल के पार हाइवे शुरू होता था और कोई ट्रैफिक नहीं था। इसी बीच बस ऑपरेटर का मोबाइल पर संदेश आया कि बस का समय 7:30 बजे से बढ़ाकर 8:00 कर दिया गया है। इस संदेश को पढ़ कर सब ने एक बार जोर से गंगा मैया की जय बोली। हम तो लगभग 7:45 बजे बस स्टॉप पर पहुंच गए थे, परंतु अब हमारी बस ट्रैफिक जाम में फंसी थी, जो लगभग 9:15 बजे पहुंची। बस में बैठकर हमें लगा कि गंगा मैया ने हमारी मुराद पूरी कर दी है। थकान के कारण सब पूरी रात बस में सोते रहे और सुबह उठे तो दिल्ली पहुँचने वाले थे।

कुंभ स्नान का अनूठा अनुभव जीवन भर स्मृति पटल पर अंकित रहेगा। मुझे लगा इस अनुभव को अपने साथियों के साथ भी साझा किया जाना चाहिए।

तुम सूरज, मैं चंदा

प्रीति पराशर
भौतिक चिकित्सक
क.रा.बी.निगम, आदर्श अस्पताल, फुलवारीशरीफ, पटना

हम औरतें ऐसी ही होती हैं, पुरुष को अपना सूरज मान बैठती हैं और खुद को चाँद। इस भ्रम में उम्र बिता देती हैं कि हम अपनी सारी उर्जा अपने पुरुष साथी से पाती हैं। अपने अन्दर भरे अंगार को देखने की फुर्सत कहाँ है हमें। हर दिन जिम्मेदारियों का बोझ लेकर आता है और उन्हें निभाते–निभाते आँखें बोझिल हो जाती हैं। आँख मूंदे हम अपनी घर–गृहस्थी में ऐसे रम जाते हैं, कुछ याद तक नहीं रह जाता कि इससे पहले हम क्या हुआ करते थे। मैं भी ऐसे ही रमी थी अपनी गृहस्थी में कुछ दिन पहले तक, फिर एक रात एक पार्टी में एक लेखक मिले। उन्होंने याद दिलाया कि पहले मैं लिखती थी। इतने बड़े लेखक को मुझमें संभावनाएं दिखी थीं, जब सात साल पहले मैंने एक वेबसाइट के लिए उनका साक्षात्कार लिया था। लिखना कब और कैसे छूट गया पता ही नहीं चला। पढ़ाई खत्म होते ही बेटे की अगुआई और उसके बड़े होने से पहले ही ये नौकरी। ये नहीं कह सकती कि समय नहीं मिला। समय तो था ही पर मैं निकाल नहीं पाई। अब जब नींद से जाग ही गई थी, कुछ तो करना ही था मुझे। पर क्या? पता नहीं।

बात करती हूँ अपने सूरज की, यानि मेरे पति की। मैंने पति से बहुत कुछ सीखा है, मसलन एलीवेटर पर बिना डरे चढ़ना, रेल, विमान आदि के टिकट काटना। मैं हमेशा सोचती रही कि उन्होंने मुझे कितना आत्मनिर्भर बनाया है। जब इस नौकरी के लिए मेरा चयन हुआ था, तब उन्होंने ही प्रेरित किया कि कार्यग्रहण करो, वरना नन्हे से बच्चे को छोड़ कर मैं नौकरी करने नहीं जाती। इन सब बातों के लिए एहसान मानती रही उनका। पर अब सोचती हूँ, क्या इन सब में उनका खुद का स्वार्थ नहीं था? मेरी नौकरी से उन्हें भी तो वित्तीय सुरक्षा मिली। बुढ़ापे में मेरी पेंशन के सहारे जीने का विकल्प मिला। मेरे आत्मनिर्भर होने से उन्हें भी तो आजादी मिली कई जिम्मेदारियों से। अब वो आराम से महीने के 15 दिन शहर के बाहर रहते हैं, घर की और बच्चों की कोई फिक्र किए बिना। खैर अब चार अकिल चौह आ जाने के बाद 32 साल की उम्र में नया क्या कर सकती हूँ, अपनी जिन्दगी के साथ? न अपनी नौकरी छोड़ सकती हूँ, न अपने बच्चों के समय में से कुछ समय चोरी कर सकती हूँ। पढ़ने–लिखने के साथ गाने का भी उतना ही शौक है। फिर से शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दूँ? बच्चे भी सीख लेंगे साथ में। दो साल की गुड़िया अभी से गानों की लाइनें याद कर लेती है। पर पास वाले म्यूजिक सेंटर में तीन कुत्ते हैं और मुझे कुत्तों से डर लगता है, बहुत ज्यादा।

खैर मैंने पढ़ना शुरू कर दिया था। घर पर तो पूरा समय बच्चों का होता है, इसलिए अस्पताल में ही एक मरीज के जाने और दूसरे के आने के बीच के समय में किश्तों में पढ़ने लगी। ऐसे ही एक दिन हंस का ताजा अंक पढ़ रही थी कि एक महिला मेरे पास आई। एकदम बेढंगे तरीके से साड़ी पहने हुए और सर का पल्लू सँभालते हुए। मुझे ऐसी औरतों को देख कर अपने पढ़े–लिखे होने का घमंड हो आता है और मैं चाह कर भी उनसे अच्छे से बात नहीं कर पाती। मैंने पूछा क्या हुआ है आपको? जवाब में वो मुस्कुराई तो मैंने देखा, उसकी मुस्कान तिरछी है और सिर्फ एक पलक ही झपकती है। बेल्स पालसी था उसे। मैंने पूछा कब से है, तो बोली 2–3 साल हो गए। मैंने पूछा इलाज क्यों नहीं कराया पहले, बोली– समय नहीं मिला। मुझे आदतन गुस्सा आया। ऐसा क्या करती हैं आप कि इतने सालों में समय नहीं मिला। बोली– मैं घर से निकलती नहीं थी पहले, अब शुरू किया है। मैंने पुछा कैसे हुआ ये, बोली– पति ने थप्पड़ मार दिया था। अब मुझे तेज गुस्सा आया। मार भी खाती हैं आप घर पर?

पति की शिकायत नहीं करती? वो अपनी उसी सहज मुस्कान के साथ बोली– वो कोरोना में चल बसे, बीमार थे। मुझसे कुछ गलती हो गई थी, इसीलिए मारा था।

मैं एक पल के लिए सुन्न हो गई। उसकी मांग की ओर नजर गई, बिंदी लगाई थी, पर सिन्दूर नहीं था। गला बिलकुल खाली था, अमूमन यहाँ की विधवाएं गले में जितिया पहनती हैं। मैंने पूछा बच्चे हैं? बोली– पति के हैं, उनकी पहली शादी से। अब उनके लिए मां–बाप दोनों मैं ही हूँ न। बहुत प्यार करते हैं मुझे, बड़ा वाला मुझसे बस तीन साल छोटा है। अपनी पहाड़ जैसी जिन्दगी कैसे काटेगी ये औरत? इतना कुछ होने के बाद भी कितनी सहजता से मुस्कुरा लेती है। मेरे पिता सक्षम थे तो उन्होंने मुझे पढ़ा दिया। इसके पिता मजबूर रहे होंगे, तभी तो एक विधुर से इसका विवाह कर दिया। खुद का अपना कुछ न होने पर भी कितनी संतुष्ट थी वो जीवन से। अपने सौतेले बच्चों का प्यार ही काफी था उसके लिए।

अब इसे संयोग ही माना जाए कि उसके तुरंत बाद जो महिला आई उसने भी डेढ़ महीने पहले पति को खो दिया था। मात्र अट्ठाईस साल उम्र और गोदी में दो बच्चे। पति के बारहवीं के दिन सास–ससुर ने मारा था, उन्हीं चोटों का इलाज कराने आई थी। सास–ससुर चाहते थे कि वो अपने नशेड़ी देवर से शादी कर ले, पर वो उनके एक और बेटे की मौत का कलंक लेने को तैयार नहीं थी। मायके जाकर रहूंगी तो बच्चों का भविष्य खराब हो जाएगा वो बोली। मैंने कहा फिर क्या योजना है आगे के लिए, बोली– पति की कंपनी से नौकरी का प्रस्ताव मिला है, वही करूँगी और अपने बच्चे पाल लूंगी।

मैं हैरान थी इन दो महिलाओं की हिम्मत देख कर। इन्हें किसी सूरज की जरूरत नहीं थी। ये अपना सूरज स्वयं थी। मुझे खुद पर थोड़ी कोफ्त हुई, मेरे पास सब कुछ होने पर भी मैं संतुष्ट क्यों नहीं हूँ। आखिर और क्या चाहती हूँ जिन्दगी से? मैं जब अपने भविष्य की कल्पना करती हूँ तो क्या सोचती हूँ? मैं बूढ़ी होकर अपने बच्चों के बच्चे संभालना चाहती हूँ? नहीं तो! मैं कल्पना करती हूँ, पहाड़ों पर देवदार की खुशबू से भरा एक घर, जहाँ बेहद खूबसूरत लकड़ी की पॉलिश वाला फर्नीचर है और कांच की दीवारों के उस पार मेरा सुन्दर बगीचा है। मेरे पास किताबें–ही–किताबें हैं और कई प्रकार की हर्बल चाय का कलेक्शन है। बिस्तर नहीं है, बस एक सोफा है, जिस पर मैं किताबें पढ़ते–पढ़ते सो जाना चाहती हूँ। नेपथ्य में अली सेठी गा रहे होते हैं– "न खुले आँख अगर ख्वाब है तो ख्वाब सही..." किसी साथी की कल्पना नहीं कर पाती। कभी–कभार कोई मिलने आ जाए तो वो अलग बात है। इन्हीं ख्यालों में उलझी थी कि पतिदेव का फोन आया। सुनो! घर जाकर मेरे कपड़े पैक कर देना, नेपाल यात्रा पर जा रहा हूँ कल। मैंने कहा– इस बार तुम नहीं मैं जाऊंगी यात्रा पर और तुम बच्चों को संभालोगे। वो जोर से हँसे, तुम अकेली जाओगी? मैंने कहा– पहाड़ों में जाकर सुकून से बैठूंगी और लैपटॉप में पड़ी सारी अधूरी कहानियों का अंत लिखूंगी। वापस आकर उन्हें छपवाना भी है। पहली कहानी जब कथादेश में छपी थी और तुमने खुद को उस कहानी का खलनायक मान लिया था। तब से सब अधूरा ही लिखती हूँ ताकि छपने की गुंजाइश ही न रहे। पर अब नहीं, मुझे अपना सूरज स्वयं बनना है। फोन के उस पार की खामोशी ने मेरी बात पर मुहर लगा दी थी।

भोले-भुलक्कड़

मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, बैरकपुर

हम ऐसे क्यों हैं, पर समझ नहीं पाते,
बार–बार गिरते हैं, फिर भी उठ जाते।
लोगों की मदद में दिल लगाते,
बदले में धोखे ही हाथ आते।

हर बार ठुकराए जाते हैं,
फिर भी मुस्कान से दिल लगाते हैं।
जख्म पर जख्म सहते जाते,
फिर भी नफरत नहीं बसाते।

धोखों की आंधी में भी,
हमारे संस्कार नहीं डगमगाते।
प्यार की बातों में खोकर,
फिर से उसी राह पर चल पड़ते।

गिरते हैं, संभलते हैं,
पर हार कभी नहीं मानते हैं।
एक ही गड्ढे में बार–बार,
गिरने की आदत नहीं छोड़ते हैं।

हमारे दिल में बस प्यार ही बसता,
भूल जाते हैं सब दु:ख–दर्द का किस्सा।
भुलक्कड़ हैं हम, ये जानते हैं,
फिर भी नेक राह पर चलते हैं।

कभी न बदलेगी हमारी फितरत,
भोले–भाले हैं, पर दिल में सच्चाई बसी है।
धोखा खाने के बावजूद,
हमारी मदद की आदत नहीं हटी है।

लोग कहते हैं, "अरे, तुम मूर्ख हो!",
हम बस मुस्कुराकर सिर झुकाते।
हम जानते हैं, गड्ढे में फिर गिरेंगे,
फिर भी किसी का दर्द बाँट लेंगे।

हम भोले हैं, पर दिल में है करुणा,
मदद करते रहेंगे, यही हमारी धरोहर है।
हर धोखे के बाद भी,
हम अपने अच्छे कर्मों में आगे बढ़ेंगे।

हर ठोकर के बाद भी,
हमारे दिल में सच्चाई है।
हम भोले हैं, और यही हमारी पहचान है,
हमारी नेकी और प्यार ही हमारी शान है।

हम भोले–भाले हैं, भुलक्कड़ हैं,
और यही हमारी पहचान है।

मिलने की अधूरी कहानी

रामराज मीना
उप निदेशक (प्रशासन/रा.भा. प्रभारी)
क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल राजाजीनगर, बेंगलूरु

उसका नाम पहले भी सुना था
थी वो लाल लिबास में लिपी हुई।
जब देखा था पहली बार,
कनखी मुस्कराहट थी उसके चेहरे पर।
न जाने क्यूँ उनको देखकर खुश था मैं भी बहुत
जब उनसे हाथ मिलाया था पहली दफा
थी घबराहट दोनों तरफ
जब देखा उनको दूसरी दफा
जैसे वो अनकही नजरें
देख रही थी मुझे
जाने क्यों एहसास हुआ
मुस्कराहट देखकर उनकी
था इंतजार उन्हें भी हमारा
वो रुदाली आँखों से भी मुस्करा देती थी
मुझे देखकर, यहाँ भी हाल वैसा ही था
जाने क्यूं उनको देखने के
बहाने ढूंढ़ता था मेरा मन
लेकिन है आज भी अधूरापन लगा
खलिश मुस्कान का अपनी क्या करे
मुद्दतें गुजरी देखे उनको अब बता भी दो
ओ रिश्तों में सरकारी फाइलों सी लालफीताशाही
लागू करने वालो।

पूतना का सच

रण सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, बेंगलुरू

आमतौर पर पूतना को उसकी राक्षसी प्रवृत्ति के रूप में हम सब जानते हैं। कंस ने बाल रूपी भगवान योगेश्वर कृष्ण को मारने के लिए उसे गोकुल भेजा था। आइए जानते हैं, यह पूतना कौन थी, राक्षसी कैसे बनी। हर व्यक्ति में दैवीय गुण भी होते हैं तथा राक्षसी प्रवृत्तियां भी होती हैं। जब दिव्यता, सात्विकता, संतोष आदि गुण अधिक हों तो वह व्यक्ति दिव्यता से ओत–प्रोत रहता है तथा इसकी विपरीत अवस्था, जिसमें उसका उस पर कोई नियंत्रण नहीं रहता, तो वह अवस्था पागलपन, विक्षिप्तता तथा राक्षसी प्रवृत्ति की हो जाती है।

कंस के कई अमात्य थे, जैसे– प्रलंब, गर्गाचार्य, छंदक, अघ तथा प्रद्योत। अघ को छोड़कर सभी अमात्य अंदर–ही–अंदर कंस की करतूतों से नफरत करते थे। उन्हें विश्वास था कि नारद की भविष्यवाणी सफल होगी तथा मन से कंस का विनाश चाहते थे। देव प्रेरणा से वे सभी देवकी के आठवें पुत्र की येन–केन–प्रकारेण रक्षा कर रहे थे। मथुरा राजमहल की सारी कुत्सित चालों की सूचना वे गोकुल तक पहुंचा देते थे। इसी कारण कंस की सारी योजनाएं विफल हो जाती थीं।

पूतना कंस के अमात्य प्रद्योत की पत्नी थी। पूतना का असली नाम **महादेवी** था। उसके दो बच्चे थे, जो कृष्ण जी की आयु के थे। कंस को आभास हो चुका था कि हो ना हो देवकी के आठवें पुत्र को छलपूर्वक मथुरा से बाहर भेजा जा चुका है तो उसे लगा उसका संहारक तो जीवित है तथा उसने योजना बनाई कि मथुरा में कृष्ण की आयु के सभी बच्चों को क्यों न मार दिया जाए ताकि उसके संहारक को भी मारा जा सके। कंस ने सबसे पहले अपने अमात्य प्रद्योत की पत्नी महादेवी को कहा कि वह अपने हाथ से अपने दोनों बच्चों को मारे अन्यथा कंस को मारने पड़ेंगे। कंस ने कहा था कि वह स्वयं निपूता है, इसलिए वह सभी को निपूता देखना पसंद करता है।

ऐसे क्रूर शासक के इस कथन से महादेवी का मानसिक स्वास्थ धीरे–धीरे बिगड़ने लगा। कुछ समय के बाद उसके दोनों बच्चे अचानक गायब कर दिए गए। उसने सोचा कि कंस ने उसके बच्चों का अपहरण करवा दिया है या मरवा दिया है। वह दिन–रात बड़बड़ाती रहती थी। उसको नींद आनी बंद हो गई और कुछ समय के अंतराल के बाद विक्षिप्त अवस्था में पहुंच गई। उसे समय–समय पर पागलपन के दौरे पड़ने लग गए।

एक दिन, इसी विक्षिप्तता की अवस्था में उसने घर के बाहर खेल रहे कई बच्चों का गला घोंट कर मार दिया। पागलपन के दौरे खत्म होने पर उसे इसका पश्चाताप भी हुआ। लोगों ने इसकी शिकायत कंस से की, लेकिन कंस तो चाहता ही यह था कि बच्चों की हत्या हो, अतः महादेवी पर कोई न्यायिक कार्रवाई नहीं की गई। कंस को ऐसे ही व्यक्ति की तलाश थी। अब तो वह मौका मिलने पर बच्चों की हत्या करती रहती थी। लोग उससे डरने लग गए थे तथा अपने बच्चों को उससे छुपा कर रखते थे। लोग उसे निपूता... ना पूता...पूतना कहने लगे थे। इस तरह उसका नाम पूतना पड़ गया।

महादेवी का पति उसका उपचार करवाना चाहता था, लेकिन कंस ने कहा कि उसे तो विक्षिप्त महादेवी की ही आवश्यकता है। इसी विक्षिप्त अवस्था में महादेवी ने कंस का अपमान भी कर दिया। कंस उसे इस अपमान के बदले मृत्युदंड या आजीवन कारावास देना चाहता था, लेकिन महादेवी

के पति ने गिड़गिड़ाकर कंस को संतुष्ट कर लिया कि विक्षिप्त अवस्था के कारण वह स्वत्व खो चुकी है, इसलिए उससे आपका निरादर हुआ है। उसकी चिकित्सा हेतु राजवैद्य की सुविधाएं दे दी गईं।

राजवैद्य के उपचार से वह ठीक होने लगी। उसे अपने कुकृत्यों पर पश्चाताप होता था। इसी बीच कंस ने महादेवी के अमात्य पति को बुलाकर कहा कि वह उसे महा अमात्य बनाना चाहता है, पर उसकी एक शर्त है कि वह महादेवी को उसके पास लाए। उपचार से ठीक होने पर वे दोनों कंस से मिले तो कंस ने एकांत में स्वर्ण की शीशी में रखे गए विष को महादेवी को देते हुए कहा कि वह इसे अपने स्तनों पर लगाकर कृष्ण को स्तनपान करवाए। इस कार्य हेतु हां करने पर उसके पति प्रद्योत को महा अमात्य बनाया जाएगा, मना करने पर या रहस्य उद्घाटित होने पर उनकी सपरिवार हत्या कर दी जाएगी।

ऐसी परिस्थिति में सोचिए, मानसिक बीमारी से जूझ रहे व्यक्ति की क्या हालत रही होगी। उसने मन–ही–मन योजना बना ली थी और कंस के इस प्रस्ताव को मजबूरी में स्वीकार कर लिया। महादेवी एक उच्च कोटि की नर्तकी भी थी। कंस ने कहा कि शरद पूर्णिमा के दिन गोकुल में बड़ा उत्सव होता है। तुम्हें वहां नर्तकी की वेशभूषा में जाकर कन्हैया को स्तनपान करवाना है।

रात होने पर प्रद्योत महादेवी को स्वयं रथ पर बिठा कर यमुना किनारे छोड़ देता है। महादेवी ने यमुना किनारे बैठकर अपने स्तनों पर महाविष लगाया और गोकुल के उत्सव में सम्मिलित हो गई। उसके नृत्य से सभी सम्मोहित हुए। नृत्य के कारण वह सबकी प्रिय बन गई। यशोदा ने उसे रात्रि विश्राम के लिए अपने कक्ष के समीप कक्ष दे दिया। रात को थक–हारकर जब सब गहरी नींद में थे, तब महादेवी कृष्ण को यशोदा के पास से उठाकर अपने कक्ष में ले आई। महादेवी ने कन्हैया को लिटा दिया और स्वयं नीचे बैठकर अपने स्तनों पर लगे विष को अपनी उंगली पर लगाकर जिह्वा पर लगा लिया। पल भर में ही उसका शरीर नीला पड़ गया। जब पता लगा की कन्हैया गायब है, तो खोज हुई तो पता चला कि पूतना मरी पड़ी है और कृष्ण लेटा हुआ मंद–मंद मुस्करा रहा है।

महादेवी ने अपने जीवन की आहूति देकर, न केवल कंस को दिया हुआ अपना वचन पूरा किया अपितु अपने पति व परिवार को मृत्यु के मुंह से भी निकाला। कृष्ण का बाल भी बांका नहीं होने दिया तथा कंस के पाप का घड़ा भरने में ईश्वरीय शक्तियों की मदद भी की। धन्य है ऐसी देवी, महादेवी।

साभार – "कृष्ण की आत्मकथा" के प्रसंग पर आधारित लेख।

जीवन क्या है?

राजीव शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम, सूरत

अगर बायोलॉजिकल आइडिया से सोचा जाए तो जन्म से मृत्यु के बीच की अवधि को जीवन कह सकते हैं। या फिर, सजीव होने की शर्तों (साँस लेने, खाने–पीने, प्रजनन करने इत्यादि) को पूरा करने से जीवन बनता है। इस बारे में कई आधुनिक बहसें भी शुरू हो गई हैं कि गर्भ में शिशु को कब माँ के शरीर से अलग एक अलग, जीवन माना जाना चाहिए। पूरी दुनिया इसी अवधारणा पर गर्भपात सम्बन्धी कानून निर्धारित करने का आधार स्थापित करने की कोशिश कर रही है। इसके साथ ही, इच्छा मृत्यु की वकालत करने वाले भी जीवन को सजीव होने की शर्तों से मुक्त करके देखने और दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

इसके अलावा जीवन का दर्शन समझने के लिए सदियों से मनुष्य कोशिश करता आ रहा है। इसी बीच एक प्रश्न सदियों से निरंतर हमारे सामने है कि जीवन का मकसद क्या है? सिग्मंड फ्रायड ने अपने 'द डेथ ड्राइव कांसेप्ट' का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं– Aim of all life is death. इस विचार के अनुसार जीवन के प्रारम्भ होते ही उसका मकसद तय हो जाता है और वो है, मृत्यु। बाकी सब इस सफर के बीच के पड़ाव मात्र हैं। परन्तु, जीवन क्या मृत्यु की ओर एक दौड़ मात्र है!

क्या आपने कभी किसी ऐसे इन्सान से उसके जीवन का मकसद पूछा है, जो सुबह उठता है, दिन भर अपने काम में व्यस्त रहता है और सो जाता है। किसी भाजी वाले से ये पूछा है, जो सुबह होने के पहले सस्ती और ताजी सब्जियों के लिए थोक बाजार के लिए निकल जाता है। उससे अगर ये सवाल पूछा जाए तो वह पहले तो चौंकेगा, फिर जोर देने पर अगली सुबह तक का मकसद बता पाएगा। ये कि उसे ताजी सब्जियां मिल जाएँ और शाम को अच्छे दामों पर बिक जाएँ। उन पैसों से वह घर का कुछ सामान, बच्चों के लिए खिलौने लाएगा। बचे पैसे से कल सुबह फिर सब्जी लाने निकल जाएगा। इसके अलावा उसका मकसद एक छोटा घर, बच्चों की पढ़ाई इत्यादि हो सकता है। परन्तु यहाँ पर ये ध्यान देने की बात है कि ये उसका मकसद है, उसके जीवन का नहीं। उसके जीवन का मकसद तो किसी ऐसे बड़े उद्देश्य में निहित होना चाहिए, जिसमें उसका पूरा जीवन समाहित हो सके। अधिकांश लोगों का जीवन ऐसे ही छोटे–छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए बीतता है। ऐसे में वो किसी एक बात को अपने जीवन का मकसद नहीं बता सकते या निर्धारित कर सकते।

कुछ लोग जो अपने जीवन की उपयोगिता जानना चाहते हैं, वो अपने जीवन के मकसद की तलाश में निकल पड़ते हैं। कुछ को इसमें सही रास्ता मिल भी जाता है, कुछ किसी लक्ष्य को ही जीवन का मकसद समझ बैठते हैं। हालाँकि, जो भी हो, मकसद मिले या उसके मिलने का भ्रम मिले, आगे बढ़ने का रास्ता खुल जाता है।

अब सवाल आता है कि जीवन में होता क्या है? अगर इसका उत्तर बुद्ध से जानना चाहें तो वो कहते हैं कि जीवन दुःख है। दुःख जीवन में होता है, और वो होकर रहेगा। जीवन कभी एक सा नहीं रह सकता। आप यहाँ पर जीवन को किसी इन्सान के जीवन के समय से समझ सकते हैं। इस प्रकार जीवन का समय/परिस्थितियां निरंतर बदलती रहती हैं। हम अपनी सुविधा और इच्छा के विपरीत किसी भी परिवर्तन से दुखी हो जाते हैं। जो दरअसल एक परिवर्तन ही है। उदाहरण के तौर पर देखें तो किसी दिन एक इन्सान को रास्ते में पड़ा हुआ एक बटुआ मिल जाता है, जिसमें काफी धन है। वो प्रसन्न हो जाता है। दूसरे दिन वो बटुआ खो जाता है, वो दुखी हो जाता है। उस समय/परिस्थिति को कोसने लगता है। बटुआ मिलने की

बात वो भूल जाता है, लेकिन उसके खोने की बात वो वर्षों तक नहीं भूलता है और इस घटना का जिक्र हमेशा एक दुःख के कारण के रूप में करता है। यहाँ अंतर केवल यह है कि उसने बटुआ मिलने की बात तो स्वीकार कर ली, लेकिन उसके खोने की बात स्वीकार नहीं कर पाया। इस तरह परिस्थितियों के परिवर्तन की अस्वीकार्यता दुःख उत्पन्न करती है, ऐसा कहा जा सकता है।

लेकिन हर कोई दुःख–सुख से निरपेक्ष नहीं रह सकता। ये केवल सिद्ध व्यक्ति ही कर सकते हैं। तो हमारे जीवन में दुःख–सुख किसी भी परिस्थिति में रहने ही वाला है। सुख को स्वीकार करने में कोई झंझट ही नहीं है, इसलिए केवल दुःख ही बच जाता है, जिससे जीवन प्रभावित होने वाला है। हिन्दू पुराणों में इस बारे में एक बात बड़ी सही कही गई है कि जिस तरह कमल पानी पर रहता है, पानी में नहीं रहता। उसी तरह दुःख के साथ रहा जाए लेकिन दुखी होकर नहीं। इस बात पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि जो सुख हमें मिले हैं, हम उन्हें स्वीकार कर उन्हें भूल गए हैं। उनकी वजह से खुश भी रहा जाए। जब दुःख साथ रहने ही वाला है तो हर समय दुखी रहकर भी आखिर क्या मिल सकता है!

दुःख अनचाही परिस्थितियों के अस्वीकार्यता से उत्पन्न होता है। लेकिन, अस्वीकार्यता भी कहाँ अपने बस में है। ये स्वाभाविक ही है कि दुःख तो अस्वीकार्य ही होता है सबको। अब राह चलते चोट लग जाए तो कौन होगा, जो इसे स्वीकार कर इसका स्वागत करेगा? कोई नहीं। स्वाभाविकता भी प्रकृति की एक पर्याय है। जिस तरह प्रकृति अपने नियमों से चलती है, उसी तरह स्वाभाविकता भी अपने कुछ ढर्रे से चलती है। स्वाभाविकता भी संस्कृति के चलन पर निर्भर करती है। जैसे कि होंठों में लोहे के छल्ले पहन लेना दक्षिण अफ्रीका के कुछ कबीलों के लिए स्वाभाविक है, जबकि बाकी की दुनिया के लिए बिलकुल अजीब प्रथा। स्वाभाविकता व्यक्तिगत भी होती है, जैसे किसी के लिए देर रात सोना और दिन में देर से उठना स्वाभाविक है, और दूसरों के लिए अस्वाभाविक। ओह, क्या बात कर रहा था, कहाँ आ फंसा!

बात कुल मिलाकर यही है कि परिस्थितियों की स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता अपने बस में ही नहीं है, जिसे दुःख का मूल कारण समझा जा सकता है। तो फिर, दुःख पर अपना कहाँ बस चल सकता है! अपनों का मोह हमें मानवीय भावनाओं से व्यस्त ही रखेगा और हम इसी तरह खुश होते और दुखी होते रहेंगे। कम–से–कम तब तक, जब तक मूल ज्ञान की रौशनी हमें छू कर नहीं जाती। हमारे बस में केवल यही है कि इस रौशनी को पाने के लिए हम रौशनी और अपने बीच के दरीचे खोलते रहें। जब तक आखिरी दरीचा नहीं खुल जाता, इस रौशनी को देख पाना भी अपने बस में नहीं, पाना दूर की बात है। बस, यही उम्मीद कर सकते हैं कि जितनी जल्द हम रौशनी के दरीचों तक पहुँच पायें, इसे खोलने का तरीका पा सकें। इस तरीके को पाने के लिए बुद्ध सात सालों तक पेड़ के नीचे कई उपाय आजमाते रहे कि रौशनी तक पहुँच पायें। वो विलक्षण थे, तब सात सालों के हर पल का इस्तेमाल कर इसे पा सके। हम साधारण लोगों से, जो सुबह–शाम बाबूगिरी और गृहस्थी के बीच झूल रहा है, क्या ही उम्मीद की जा सकती है! फिर भी, कोशिश तो जारी ही रहेगी। आह, अब क्या लिखूं, दोपहर हो रही है। अँधेरा होने के पहले रौशनी तक पहुँचना भी है।

भाषिणी - कृत्रिम बुद्धिमत्ता से अनुवाद

श्याम सुंदर कथूरिया
निदेशक (राजभाषा)
मुख्यालय, क.रा.बी.निगम, दिल्ली

भारत सरकार ने हमारे बहुभाषी देश की विविध भाषाओं के बीच की बाधाओं को समाप्त करने के लिए सेतु रूपी अनेक डिजिटल समाधान या टूल तैयार किए हैं। इनमें प्रमुख हैं– कंठस्थ, भाषिणी, अनुवादिनी, आदि। ये विभिन्न प्रयोजनों, क्षेत्रों और उपयोगिताओं के अनुसार बनाए गए हैं। भाषिणी– एक शक्तिशाली अनुवाद एप्लीकेशन है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा अपने ''राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन'' के अंतर्गत विकसित एक भारतीय सरकारी परियोजना है। यह वस्तुतः राष्ट्रीय एकता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग है। इसका उद्देश्य भारतीय नागरिकों को विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री का अनुवाद करने में मदद करना और भारत भर में अलग–अलग भाषा बोलने वालों के बीच प्रभावी संचार को सक्षम करना है, जिससे भारत में भाषायी अवरोध को कम किया जा सके।

पृष्ठभूमि

भाषिणी को अगस्त 2022 में गुजरात के गांधीनगर में शुरू किया गया था। ''भाषिणी'' नाम ''भारत के लिए भाषा इंटरफेस'' (Bhasha Interface for India) का संक्षिप्त नाम है। इसकी वेबसाइट का यूआरएल https://bhashini.gov.in है।

डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन (डीआइसी) के तहत डिजिटल इंडिया भाषिणी डिवीजन (डीआइबीडी) नामक एक स्वतंत्र बिजनेस डिवीजन (आइबीडी) शुरू किया गया है, ताकि भाषिणी इकोसिस्टम को स्टार्टअप्स के साथ सहयोग करने में मदद मिल सके।

प्लेटफॉर्म

यह प्लेटफॉर्म भाषा अवरोधों से परे जाने के लिए प्राकृतिक भाषा प्रक्रमण और कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग करता है, जिससे विभिन्न राज्यों में डिजिटल सशक्तीकरण और डिजिटल समावेशन सुनिश्चित होता है। इसमें ओपन भाषिणी एपीआइ के माध्यम से भाषिणी पारिस्थितिकी तंत्र भागीदारों के लिए 300 से अधिक पूर्व प्रशिक्षित एआइ मॉडल उपलब्ध हैं।

उद्देश्य

इस एप्लिकेशन को बनाने का प्रमुख उद्देश्य है, विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को सरल और सुलभ बनाना। इससे भाषा की बाधाओं को दूर कर संचार को आसान बनाने में सहायता मिलेगी। यह भारत में भाषा विविधता को बढ़ावा देने में भी सहायता करेगा। सरल शब्दों में समझना हो तो इसे "सुनो, बोलो, लिखो, देखो भारत" की संकल्पना के आधार पर विकसित किया गया है। 'भाषिणी' भाषा के क्षेत्र में हमारे देश को डिजिटल भारत बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। यह भारतीय भाषाओं में डिजिटल पहुँच को भी सुनिश्चित करेगी।

विशेषताएँ

भाषिणी में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य अनुवाद माध्यमों से विशिष्ट बनाती है। यह 'वास्तविक समय अनुवाद' की सुविधा से युक्त है। इसे पाठ, ऑडियो, वीडियो और छवि अनुवाद समर्थ बनाया गया है। इस अनुवाद तकनीक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन अधिगम का अनूठा एकीकरण किया गया है। इसलिए यह वाक्य सुधार और सुझाव सक्षम बन गया है। निश्चित ही इससे इसकी अनुवाद गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। इसे केवल अनुवाद तक ही सीमित नहीं रखा गया है, अपितु उच्चारण सुधार की सुविधा भी इसमें दी गई है। इसे भारतीय भाषाओं को ध्यान में रखते हुए बहुभाषी अनुवाद उपकरण के रूप में संवर्धित

किया गया है।

भाषिणी का उपयोग–क्षेत्र

भाषिणी को जब विकसित किया गया तो इसके बहुआयामी प्रयोग क्षेत्र को केंद्र में रखा गया। आज सरकारी एवं प्रशासनिक कार्य, अर्थात– ई–ऑफिस में अनुवाद की सुविधा कार्मिकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। अब कार्मिक ई–ऑफिस में बोलकर ध्वन्यांकन टंकण द्वारा हिंदी में कार्य कर रहे हैं। यह शिक्षा, विज्ञान, विधि के साथ–साथ व्यापार और कॉर्पोरेट जगत के लिए भी लाभदायक है। हम इसका उपयोग व्यक्तिगत कार्यों के लिए भी कर सकते हैं।

भाषिणी के तकनीकी पहलू

भाषिणी, आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग या प्राकृतिक भाषा प्रक्रमण का उपयोग कर रहा है। जब हम इसका प्रयोग करते हैं तो हमें क्लाउड–आधारित सेवाएँ मिलती हैं। जब हम किसी अनुवाद टूल का प्रयोग करते हैं तो पाठ की गोपनीयता बने रहना एक बड़ी चुनौती होती है। जबकि भाषिणी में आँकड़ों की सुरक्षा और गोपनीयता की कोई समस्या नहीं होती है, विशेषतः सरकारी कार्यों में। इसे प्रयोग करने के लिए सहज बनाने के प्रयोजन से इसका इंटरफेस/ डिजाइन सरल और उपयोगकर्ता अनुकूल बनाया गया है। एप्प की भाषा के चयन के लिए 12 भाषाओं का विकल्प भी दिया गया है। इसके साथ–साथ प्रयोक्ता इसे विभिन्न मोड्स और थीम में प्रयोग कर सकते हैं। अनूदित पाठ को सुनने के लिए महिला तथा पुरुष दोनों, वाणी सहायक के रूप में दिए गए हैं। सरकार द्वारा इसे पोर्टल और एप्लिकेशन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, ताकि इसे कम्प्यूटर के अतिरिक्त मोबाइल पर भी प्रयोग किया जा सके। इसमें किए गए अनुवाद कार्य की रेटिंग देने का विकल्प भी दिया गया है। इसमें अनुवाद करने की अनेक सुविधाएं हैं, जैसे– टंकण, बोलकर, चित्र या ब्राउज करके अनुवाद करने के साथ–साथ दो अलग–अलग भाषा भाषी वार्तालाप के माध्यम से भी अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं।

भाषिणी के लाभ

भारत जैसे देश के लिए भाषिणी अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह बहुभाषी संचार को बढ़ावा देने वाला साधन है। इससे समय और संसाधन दोनों की बचत होगी। यह डिजिटल समावेशन का एक अनुपम उदाहरण है। एक अनुवाद उपकरण होने के कारण, यह आम जन के लिए सूचना तक पहुंच को बढ़ाएगा। इससे देश में व्यापार और पर्यटन को तो बढ़ावा मिलेगा, साथ ही सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी उत्कर्ष प्राप्त करेगा।

भाषिणी का उपयोग कैसे करें?

अपने मोबाइल फोन में इंटरनेट के माध्यम से एप्प डाउनलोड और संस्थापित करने के बाद स्रोत और लक्ष्य भाषा का चयन करके सामग्री को पाठ, वाणी या छवि के माध्यम से प्रविष्ट करके वांछित अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है।

अंगीकरण

दिसंबर 2023 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने तमिल दर्शकों के लिए अपने वास्तविक समय के भाषण का अनुवाद करने के लिए भाषिणी का इस्तेमाल किया। बाद में, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भारत के 2024 के केंद्रीय बजट भाषण

के दौरान इस मंच का इस्तेमाल किया।

जून 2024 में, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने मशीन अनुवाद की बेहतर सटीकता और प्रवाह के लिए शोध परियोजनाओं की अनुमति देने के लिए बोलीदाताओं की तलाश की। इसने सरकार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए विशिष्ट भाषा युग्मों और ऐसे डोमेन–विशिष्ट भाषा मॉडल के उपयोग को बढ़ावा दिया।

भाषिणी ने स्थानीय भाषाओं में समाधान उपलब्ध कराने के लिए अपने एआइ मॉडल प्रदान करने के लिए स्नैपडील, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, फेडरल बैंक आदि के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

सितंबर 2024 में, ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स ने सारथी नामक एप्लिकेशन लॉन्च किया, जो व्यवसायों को भाषिणी का उपयोग करके अपने स्वयं के व्यक्तिगत खरीदार–पक्ष एप्लिकेशन बनाने में सक्षम बनाता है। राजस्थान सरकार ने पहचान ऐप्प विकसित किया, जो एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है। यह भाषिणी एआइ का उपयोग करके विभिन्न भाषाओं में वॉयस कमांड को सक्षम करके जन्म और मृत्यु पंजीकरण को आसान बना रहा है।

चुनौतियाँ एवं संभावित सुधार

हम जानते हैं कि भाषिणी से किया गया अनुवाद, एक मशीनी अनुवाद होगा। यह सदैव संपूर्ण या शुद्ध नहीं हो सकता। अतः इसकी सटीकता में कभी–कभी कमी भी देखने को मिल सकती है। अभिप्राय यह है कि इसमें संशोधन तथा सुधार की अपेक्षा बनी रहती है। यह इंटरनेट पर निर्भर है। यदि नेटवर्क ठीक न हो तो त्वरित परिणाम प्राप्त करने में बाधा होती है। इसमें अभी क्षेत्रीय भाषाओं के लिए बेहतर समर्थन अपेक्षित है।

भविष्य की योजनाएं

सरकार की योजना है कि आगे चलकर इसमें और अधिक भाषाओं को सम्मिलित किया जाए, ताकि यह भारत को जोड़ने वाली कड़ी बन सके। किसी भी एप्लिकेशन की लोकप्रियता उसकी सहजता और सरलता पर निर्भर करती है। इसलिए भविष्य में इसे अधिक उपयोगकर्ता अनुकूल बनाया जाएगा। योजना यह भी है कि भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में इसकी उपादेयता बढ़े।

निष्कर्ष

भाषिणी एप्लिकेशन, राष्ट्र के नागरिकों को विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री का अनुवाद करने में मदद करने के लिए विकसित किया गया है। यह एप्लिकेशन देशवासियों को उन लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद करता है, जो एक–दूसरे की भाषा नहीं जानते हैं। इस प्रकार यह भारत में भाषा की बाधा को कम करने में मदद करेगा। यह ऐप सभी भारतीयों के लिए एक मूल्यवान उपकरण है। भाषिणी के साथ, हम एक अधिक समावेशी और जुड़े हुए समाज का निर्माण कर सकते हैं।

क.रा.बी.निगम दिवस-2025

एसिक दिवस समारोह के सुशोभित मंच पर उपस्थित मान्यवर

दीप प्रज्वलन करते हुए माननीय श्रम एवं रोजगार मंत्री महोदय डॉ. मनसुख मांडविया जी

समारोह को संबोधित करते हुए महानिदेशक, क.रा.बी.निगम श्री अशोक कुमार सिंह (भा.प्र.से.)

अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संगठन के प्रतिनिधि का संबोधन

बेहतर प्रदर्शन के लिए निगम इकाइयों को सम्मानित किया गया

एसिक दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि एवं अधिकारीगण

हिंदी अपनाकर देश का मान बढ़ाएं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस-2025

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

दीप प्रज्वलित करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक

दीप प्रज्वलित करते हुए सुश्री टी.एल.यादेन, वित्त आयुक्त

सभा को संबोधित करते हुए श्रीमती दीपिका गोविल, चिकित्सा आयुक्त

आयोजित प्रतियोगिता के विजेता कार्मिक को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक

सभागार में उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2025

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी

कार्मिकों का उत्साहवर्धन करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक

योग दिवस 2025 कार्यक्रम में सभा को संबोधित करते हुए डॉ. पवन कुमार, उप चिकित्सा आयुक्त (आयुष)

योगाभ्यास कराते हुए मुख्यालय के कर्मचारी

योगाभ्यास करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते हुए श्री हयात सिंह बिष्ट, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2024

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन समारोह 2024 में मंचस्थ अधिकारीगण

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए श्री मनीष कुमार अग्रवाल, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिक को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन समारोह के दौरान मुख्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री मनीष कुमार अग्रवाल, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए श्री अशोक कुमार सिंह, महानिदेशक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर शपथ लेते हुए मुख्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

राजभाषा पखवाड़ा-2024

प्रतियोगिता आयोजन

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्यालय के अधिकारी

मुख्यालय में राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी वाक प्रतियोगिता वर्ष 2024 का दृश्य

समापन समारोह

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए अधिकारीगण

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह वर्ष 2024 के दौरान मंच पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

वरिष्ठ अधिकारीगण के कर–कमलों से विभागीय गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का विमोचन

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है। -विलियम केरी

वर्ष 2024-25 के दौरान गृह मंत्रालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में पुरस्कृत क.रा.बी.निगम इकाइयां

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरू के संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री मंगमीनलल सितल्हौ, संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना के संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री प्राणेश कुमार सिन्हा

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर के क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी) श्री मनोज कुमार साव

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा के क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी) श्री मनीष कुमार

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, एर्नाकुलम के संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री प्रशांत डी.

क.रा.बी.नि.
E S I C

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

Employees' State Insurance Corporation

श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय भारत सरकार

Ministry of Labour & Employment Government of India
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tool Free No. 1800-11-2526
Website : www.esic.gov.in